पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

वार्षिक शुल्क : 60 रुपए

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5114, मई, 2012

विश्व के सर्वश्रेष्ठ लोक संचारक देवर्षि नारद

संघ की व्याप्ति, शक्ति और रीति

बुद्धपूर्णिमा
के
शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं।

महाराणा प्रताप जयन्ती
के
शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं।

इस अंक में

एक एव सुहृद्धर्मो निर्धनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति॥

धर्म ही एक ऐसा मित्र है जो मरने पर भी साथ जाता है, अन्य सब कुछ तो शरीर के साथ ही नष्ट हो जाता है।

वर्ष : 12 अंक : 05

मातृवन्दना

मासिक

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5114, मई, 2012

परामर्शदाता
सुभाष चन्द्र सूद

✡

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

सह-सम्पादक
कृष्ण मुरारी

✡

वार्षिक शुल्क
साठ रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
शर्मा भवन, नया
शिमला-171 009
दूरभाष व फैक्स :
0177-2671990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला-171009 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

नारद के भक्ति दर्शन में पत्रकारिता के सिद्धांत.....8

नारद को आज तक के विश्व का सर्वश्रेष्ठ 'लोक संचारक' कहा जाये तो कुछ भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। नारद के हर वाक्य, हर वार्ता और हर घटनाक्रम का विश्लेषण करने से यह बार-बार सिद्ध होता है कि वे एक अति निपुण व प्रभावी 'संचारक' थे। दूसरा उनका संवाद शत-प्रतिशत लोकहित में रहता था। वे अपना हित तो कभी नहीं देखते थे, उन्होंने समूहों पर जातियों आदि का भी अहित नहीं साधा। उनके संवाद में हमेशा लोक कल्याण की भावना रहती थी।

सम्पादकीय	पत्रकारिता में नारदीय-गुण आवश्यक	5
प्रेरक प्रसंग	ईमानदारी सभी कष्टों का इलाज	6
चिन्तन	जनसांख्यिकी युद्ध का दबाव	7
संगठनम्	संघ की व्याप्ति, शक्ति और रीति	11
देवभूमि	लोकसेवा गारंटी अधिनियम	15
देश-प्रदेश	भारतीय मुस्लिम न करें	16
घूमती कलम	सांस्कृतिक, ऐतिहासिक सीरियल	18
विविध	मातृभाषा में पढ़ा इसलिये	20
दृष्टि	नए मगध का सड़क निर्माता	21
काव्य-जगत	मैं भारत की नारी	22
महिला जगत	मैंने हिन्दू धर्म क्यों अपनाया	23
स्वास्थ्य	डायबिटीज के घरेलू उपचार	24
कृषि	खुंब में है औषधीय गुण	25
शिक्षा	भारतीय शिक्षा पद्धति	27
समसामयिक	पानी का बाजार	28
प्रतिक्रिया	सेना में रिश्वत का मामला	29
विश्व दर्शन	जापान में महाभारत, गीता की धूम	32
बाल जगत	पंडित से बढ़कर कोई	33

पाठकीय

पाठकों के पत्र.....

मातृवन्दना का विशेषांक पढ़ा। राष्ट्र के समक्ष चुनौतियों में भ्रष्टाचार को भी राष्ट्र के विकास में बाधक एक बड़ी चुनौती स्वीकार किया गया। भ्रष्टाचार को कदाचार कहने वाले लोग स्वयं भी कहीं न कहीं पूरी तरह भ्रष्ट हैं। आज रिश्वत खोरी, कमीशन, फिरौती, हेराफेरी, कागजी लीपा-पोती, सभी भ्रष्टाचार के केन्द्र बिन्दु बन गए हैं। फिर भी हर बेईमान आदमी अपने आप को सदाचारी कहलाने की पूरी कोशिश कर रहा है। प्रत्येक मनुष्य की भौतिक सुख भोगने की इच्छाएं प्रबल हो चुकी हैं। कोठी, कार, फ्रिज, रंगीन टीवी और मोबाइल आदि मनुष्य की जरूरत बन गए हैं। इस भौतिक संसार में मनुष्य भटका-भटका सा लगता है। नेक नियति की कमाई को आदमी उपलब्धि न मान कर नम्बर दो अथवा काली करतूतों से अर्जित किये गए धन को अपनी सम्पत्ति मान रहा है। मनुष्य हेराफेरी मास्टर की पूजा और नेक आदमी का तिरस्कार करने में देरी नहीं लगा रहा है। जो विश्वस्तर की ठगी, जोर जबरदस्ती करने में माहिर है उसको महान व्यक्ति माना जा रहा है। इन्सान भूल गया कि सबसे पहले इन्सान होना ही मुश्किल है फिर जब इन्सान बन गए तो हैवानियत आ ही नहीं सकती है। शैतान ही हैवान होता है इन्सान कभी नहीं। देवासुर संग्राम में भी यही कहा गया है कि देव अमृतपान करते हैं, असुर गरल पीते हैं। यद्यपि दैत्य आकृति एवं शारीरिक तौर पर भले ही हृष्ट-पुष्ट, वलिष्ठ दिखते हैं किन्तु पशुबल मानव बल से हमेशा कम पड़ता गया है।

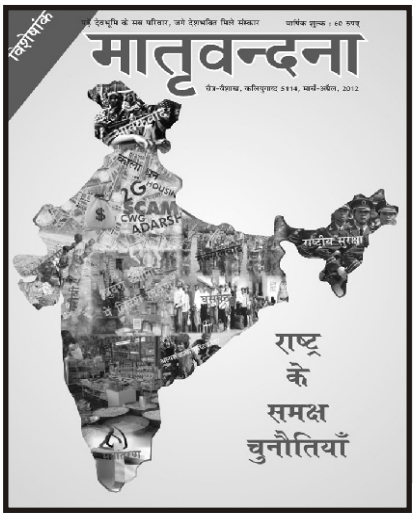

राष्ट्रीय स्तर एवं प्रांतीय स्तरों पर बड़े-बड़े नेताओं का गिरफ्तार होना, घपलों, घोटालों में भागीदार होना, यहां तक की हाल ही में कुछ केन्द्रीय मंत्रियों का सजा पाना या फिर अधिकारियों को भ्रष्टाचार संलिप्तता के परिणाम स्वरूप पकड़ा जाना एवं इस बात की कोई शर्म न होना कितने भयंकर संकेत हैं आने वाले समय के लिये। क्या देश व प्रदेश का धीरे-धीरे यही हाल होते जाना है। परन्तु मेरा पूरा-पूरा विश्वास है कि सत्य-सत्य ही है, झूठ कभी भी सच नहीं हो सकेगा।

थोड़ी देर के लिये हम बेशक भटक जाएं। धन दौलत के सपनों को संजो-संजो कर हम सपनों के महल बना लें। आखिर प्राणांत के समय जो चित्त वृत्ति मनुष्य की बन जाए तो सही मायने में आगामी जीवन का मार्ग प्रशस्त होगा। हमेशा श्रीराम का आचरण कष्टमय रहने के बाद भी प्रशंसा योग्य रहा है और रावण कितना भी बलवान व विद्वान रहा हो किन्तु निंदनीय आचरण का प्रतीक रहा है।

- **शास्त्री दीनानाथ,** मण्डी

पौष-माघ जनवरी, 2012 में मातृवन्दना पत्रिका के माध्यम से जीवन प्रवाह में राष्ट्ररूपी सूर्य किस मकर संक्रांति में है। इस विचार से सम्पूर्ण भारत की धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकता को स्पष्ट रूपेण उजागर किया गया है। इस लेख के माध्यम से निराश प्राणियों में नव चेतना भर कर हिन्दूवादी सोच को उभारा गया है। हमारे पुनीत पर्व पावनता के प्रतीक हैं जो मकर संक्रांति से अंधकार का ह्रास कर पूरे वर्ष भर प्रकाश का विस्तार कर जनमानस को सद्भाव और एकता के सूत्र में पिरोते हैं। सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत का कहना है कि स्वयंसेवक संघ ने हिन्दूवादी समाज के लक्ष्य को जागृत किया है। संघ ने जन-जन में अपने राष्ट्र के प्रति और अपने धर्म के प्रति निष्ठा एवं कर्त्तव्य का भाव जागृत किया है। हम संघ के साथ जुड़कर देश हित के लिये क्रियाशील रहेंगे। भारत वर्ष महान शक्ति बनकर उभरेगा। हमें अलग-अलग मतों में भी अपनी सोच को कल्याण की ओर अग्रसर करके विकासात्मक कार्यों को आगे बढ़ाना है। क्योंकि विश्व हमारी ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। राष्ट्रहित में किया गया कोई भी कार्य सर्वोपरि है। सभी पौराणिक कथाएं हमें प्रेरणा तो देती हैं, साथ में अपने रीति-रिवाजों व संस्कृति से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करती हैं। सूर्य की तरह हमें अपनी स्थिति बदलकर बिना शर्त सामाजिक सद्भावना के माहौल का निर्माण कर संघ कार्य करते रहना चाहिये।

- **केएस कौंडल**, ऊना

स्मरणीय दिवस (मई)

बुद्ध पूर्णिमा	6 मई
महाराणा प्रताप जयंती	24 मई

पत्रकारिता में नारदीय-गुण आवश्यक

आधुनिक युग में प्रचारतंत्र की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका उभर कर सामने आई है। प्रचार एवं प्रसार के अत्याधुनिक एवं त्वरित माध्यम से दुनिया सिमट कर रह गई है। सम्पूर्ण विश्व के घटनाक्रम से हर व्यक्ति हर क्षण अवगत हो सकता है। इस प्रकार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की उक्ति चरितार्थ होती हुई दिखाई देती है। प्रचारतंत्र के विश्वव्यापी प्रभाव को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करने वाले एवं जनमानस के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने वाले प्रचारतंत्र को स्वयं कितना जागरुक होना होगा। उसे किसी भी वाह्य शक्ति के प्रभाव में न आकर निष्पक्ष रूप से अपनी भूमिका का निर्वहन करना होगा। किन्तु वर्तमान में मीडिया की निष्पक्षता पर कई सवाल उठते हुए दिखाई देते हैं। उसका सकारात्मक पक्ष धूमिल सा दिखाई देता है और नकारात्मक पक्ष ही उभर कर सामने आ रहा है। जन विश्वास और जनभावनाओं को अनदेखा करते हुए मीडिया तीन एम (M) (मनी, मैनेजमेंट, मैनुपलेशन) के शिकंजे में जकड़ता हुआ नजर आ रहा है। अधिकांश मीडिया समूह (समाचार पत्र एवं चैनल के स्वामी) स्वयं में बड़े उद्योगपति हैं। उनका इसके अतिरिक्त और भी बड़ा कारोबार है। अपने उत्पादों के निर्माण एवं विपणन में भी उनके अपने हित जुड़े हुए हैं, इसलिए राजनीति में भी उनका हस्तक्षेप रहता है और सत्तापक्ष की ओर झुकाव भी। धन के बलबूते पर वे किसी भी निर्णायक शक्ति को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए धन की बाढ़ में सूचना स्रोत की निर्मल धारा कहीं दृष्टिगत नहीं होती। दूसरी ओर मीडिया मैनेजमेंट अर्थात् प्रचार प्रबंधन में पत्रकारों की ईमानदार लेखनी की स्याही आज फीकी पड़ती नजर आ रही है। उनके मस्तिष्क और हाथ आकर्षक वेतन देने वाले धन-कुबेरों के पास गिरवी पड़े हुए हैं। स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रूप से वे लिख तो सकते हैं पर छाप नहीं सकते और न ही दिखा सकते हैं।

पश्चिम का अनुकरण करते हुए आज प्रचारतंत्र के पास सकारात्मक सूचनाओं का अकाल है और नकारात्मक सूचनाओं की बाढ़ सनसनी फैलाने वाली खबरें ही आज बिकती हैं और उसे बेचना ही वास्तविक प्रचार प्रबंधन है। मैन्यूपलेशन आज बहुत जरूरी हो गया है प्रबंधकों और पत्रकारों के लिये तभी वे एक-दूसरे के हितों की रक्षा कर सकते हैं। राष्ट्रहित और समाजहित उनके लिये गौण विषय हो गए हैं।

ऐसे समय में हमें आदि पत्रकार देवर्षि नारद की याद आती है। व्यासदेव जी ने उनकी प्रशंसा में कहा था कि नारद जी तीनों 'लोकों' में सूर्य के समान पर्यटन करने वाले हैं और वायु के समान सभी प्राणियों की बुद्धि और वृत्ति को जानने वाले हैं। (श्रीमद्भागवत् 1/5)। उन्होंने सर्वप्रथम विष्णु भगवान् की महिमा को पूर्णतया जानने का प्रयास किया पुन: उनकी अन्यतम भक्ति की और उनका गुणगान करते हुए नि:स्वार्थभाव से तीनों लोकों का हित साधने में संरत रहे। उनका सबसे विशिष्ट गुण था समत्व भाव अर्थात् सब प्राणियों में ईश्वर को देखना। उनमें वे विलक्षण गुण थे जो आज के पत्रकारों के लिये आदर्श बन सकते हैं। सर्वप्रथम उनकी हर कार्ययोजना नि:स्वार्थ भाव से लोकहित में होती थी। वह न केवल देवताओं के अपितु असुर और मानव के भी हितचिंतक थे। दुष्टात्माओं के संहार के लिये वह सूचनातंत्र का ऐसा ताना-बाना जोड़ते थे कि बाध्य होकर सभी को उनके नक्शे कदम पर चलना पड़ता था। श्रीमद्भागवत् में सनत्कुमारों के साथ उनके संवाद से पता चलता है कि उनकी कितनी जिज्ञासु प्रवृति थी और किस प्रकार वह अपने सटीक प्रश्नों से दूसरे को सच्चाई बताने के लिये विवश करते थे। विष्णु भक्त होने पर भी उन्होंने अन्य देवताओं की पूजा-अर्चना की और उन्हें उचित सम्मान दिया। जिज्ञासा की प्रवृत्ति, प्रश्नशैली, निष्पक्ष मंतव्य, सच्चाई की खोजकर उसे उजागर करना, किसी के प्रभाव में न आना, सब कुछ जानते हुए भी तात्कालिक जानकारी के प्रति उत्सुक रहना, नि:स्वार्थ भाव से पत्रकारिता- धर्म निभाना आदि गुणों से पत्रकारों की सही दिशा और सोच का निर्माण हो सकता है। ❑

प्रेरक प्रसंग

सबसे पहले उस विराट की पूजा करो, जिसे तुम अपने चारों ओर देख रहे हो– 'उसकी' पूजा करो। ये मनुष्य और पशु, जिन्हें हम आस-पास और आगे-पीछे देख रहे हैं, ये ही हमारे ईश्वर हैं। इसमें सबसे पहले पूज्य हैं हमारे अपने देशवासी।

- स्वामी विवेकानन्द

मान-अपमान, आदर-निरादर, सत्कार-धिक्कार– ये सब तो अहंकार की माया है मां। एक बार अहंकार का विगलन कर कोई देखे तो इन द्वन्द्वों का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। **- नरेंद्र अपनी मां से**

खूबसूरत या खूबसीरत

आज हमारे समक्ष खूबसूरत बनने की बड़ी चाह और खूब सूरत बनाने का बड़ा बाजार है। महिलाओं में सांवला रंग आज के दौर में भी एक बड़ा अभिशाप है। सांवले रंग की कन्याओं के माता पिताओं को कन्या हेतु घर ढूंढना कठिन है। विवाह शादी के विज्ञापनों में नज़र फेरें तो एक समानता है कि हर किसी को सुन्दर सुडौल बेहद खूबसूरत कन्या बहू के रूप में चाहिये। इस मांग पर कोई समझौता नहीं। समाज यह क्यों नहीं सोचता कि सांवला और गोरा रंग ईश्वर का दिया है। एक मां की कोख में दो ही रंग हैं। योग्य वर और वधू की परिभाषा तो समझ आती है पर फेयर और अनफेयर कम्पलैक्शन का मुद्दा बड़ा पेचीदा है। इस रंग भेद के लिये हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को देश में और देश के बाहर एक बड़ी जंग लड़नी पड़ी थी। अब गोरी चमड़ी के प्रति हमारे समाज की सोच और चाहत बढ़ चुकी है। सांवले रंग के पुरुष भी गोरियों को चाहने लगे हैं। योग्य पुरुष एक सांवली योग्य स्त्री के अधीन काम कर सकता है परन्तु जीवन साथी बनाने में आना कानी जरूर करेगा। खूबसूरत और खूबसीरत यह दो शब्द दिखते लगभग एक हैं परन्तु खूबसूरती की एक उम्र है। नौजवानी तक तो सौंदर्य रहता है पर चालीस वर्षों के पश्चात् इसका आकर्षण घटने लगता है लेकिन खूबसीरत सारी उम्र का खजाना है, अच्छी सीरत की महक दूर-दूर तक जाती है उसके व्यवहार उसके गुणात्मक पहलुओं की चर्चा बड़ी दूर तक उदाहरण पेश करती है। सांवले रंग की सीरतवान (व्यावहारिक) स्त्री का सौंदर्य उसका व्यवहार और आचरण है। उससे मिलने वाला सुख हृदयग्राही और अमिट है। खूबसूरती बाजार में बेची जा रही है। तरह-तरह के सौंदर्य उत्पादन, फेस पैक, कॉस्मेटिक सर्जरी उपलब्ध है पर सीरत यानी अच्छा व्यवहार अच्छा चिंतन, अच्छे कर्म, चरित्र बाजारू नहीं हैं। अगर खूबसूरती ईश्वर की देन है तो खूबसीरत ईश्वर का अखंड वरदान है। ❑

- के.सी. शर्मा, कांगड़ा

ईमानदारी सभी कष्टों का इलाज

बचपन निश्चितता में, जवानी मस्ती में और बुढ़ापा कष्टों में व्यतीत होता है। बुढ़ापा कष्ट भरा क्यों होता है?इस पर मंथन करना आवश्यक है। बुढ़ापे में शारीरिक क्षमता क्षीण हो जाती है। जिसकी वजह से व्यक्ति निरुत्साहित हो जाता है। शरीर हर प्रकार की व्याधियों का घर बन जाता है। दवाईयां भी कई बार असरहीन हो जाती हैं और मनुष्य शैया पर लेटा लेटा कई दिनों तक मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहता है। घर वाले तथा प्रियजन भी निराश होकर उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा में बैठ जाते हैं। कई व्यक्ति तो औलाद मोह के वशीभूत होकर जीवन में बेईमानी, भ्रष्टाचारी का सहारा ले चुके होते हैं। ताकि उनकी औलाद सुखमय जीवनयापन कर सके। परन्तु अब औलाद मुंह मोड़ चुकी होती है। धन सम्पति सामने पड़ी है, पर उसके लिये सहायक सिद्ध नहीं हो सकती।

जीवन भर की यादें, आशाएं, कार्यक्रम सभी नजरों के सामने से गुजरते हैं। अपनी गलतियों का आभास होता है। पश्चाताप की अग्नि की पीड़ा असहनीय होती है। केवल ईमानदारी, शुभ कार्य ही सहयोगी बनकर ढाढस बंधाते हैं। अतः मृत्यु शैय्या पर लेटे पश्चाताप की अग्निपीड़ा से बचना है तो ईमानदारी से जीवनयापन का प्रयत्न करें। ❑

- प्रेमचंद माहिल, हमीरपुर

जनसांख्यिकी युद्ध का दबाव

❑ शंकर शरण

केरल के कैथोलिक चर्च ने 14 नवम्बर को ऐसे 5 हजार दम्पतियों को सम्मानित किया जिनके 5 से अधिक बच्चे थे। 'परिवार बढ़ाओ' के नारे के साथ यह अभियान आगे और तेज़ किया जाएगा। वहां कैथोलिक नेता ईसाइयों को अधिक बच्चे पैदा करने के लिये विविध प्रोत्साहन और पुरस्कार दे रहे हैं। वायनाड जिले का सेंट विन्सेट चर्च अपने क्षेत्र के हर कैथोलिक परिवार को पांचवें बच्चे के जन्म पर 10 हजार रुपये नकद दे रहा है। इदुक्की डायोसीज ने दो से अधिक हर बच्चे पर अधिकाधिक पुरस्कार और सहायता देने की विस्तृत योजना की घोषणा की है। जैसे किसी परिवार में चौथे बच्चे के जन्म पर उसके जन्म सम्बंधी अस्पताल का पूरा खर्च डायोसीज उठाएगा। पांचवें बच्चे के जन्म पर बच्चे के जीवन भर का खर्च उठाएगा। ऑल इंडिया क्रिश्चियन काउंसिल के नेता जॉन दयाल के अनुसार हर ईसाई परिवार में चौथा बच्चा होने पर उसकी शिक्षा के लिये विशेष व्यवस्था की जाएगी। ईसाई संगठनों के अस्पतालों में बड़े परिवार वाले ईसाइयों के लिये आकर्षक चिकित्सा पैकेज दिये जाएंगे आदि। अधिकाधिक बच्चे पैदा करने का यह ईसाई अभियान वर्ष 2008 से ही चल रहा है।

आज के विश्व में जनसांख्यिकी भी एक युद्ध है, जिसकी उपेक्षा करना आत्मघाती होगा। विशेषकर हिन्दुओं के लिये जिनका दुनिया में मुख्यत: एक ही देश है। किन्तु दु:ख की बात है कि जब इस पर कोई हिन्दू चिंता दिखाता है तो उसे पिछड़ा, दकियानूसी, जनसंख्या विस्फोट से नासमझ या घृणा का प्रचारक आदि बताकर हंसी उड़ाई जाती है। भारतीय जनसांख्यिकी की स्थिति पर एपी जोशी, एमडी श्रीनिवास तथा जेके बजाज ने अपने विस्तृत अध्ययन 'रिलीजियस डेमोग्राफी ऑफ इंडिया (2003) से पाया है कि भारत के हर प्रदेश में मुस्लिम जनसंख्या दूसरे किसी भी समुदाय की तुलना में अधिक गति से बढ़ी है।

यह सब इसलिये क्योंकि केरल में ईसाई संख्या पिछले एक दशक में 1/4 प्रतिशत घटी है, जबकि मुस्लिम जनसंख्या दो प्रतिशत बढ़ गई। इससे केरल के कैथोलिक नेता इतने चिंतित हैं कि उन्होंने हिन्दुओं को भी मामले को गम्भीरता से लेने के लिये कहा। क्योंकि वहां हिन्दू संख्या डेढ़ प्रतिशत प्रति दशक के हिसाब से गिर रही है। जबकि मुस्लिम जनसंख्या पौने दो प्रतिशत के हिसाब से बढ़ रही है। केरल सबसे बड़ी ईसाई आबादी वाले राज्यों में एक है। वहां लगभग 20 प्रतिशत ईसाई हैं। वे सुशिक्षित भी हैं इसलिये उनकी चिंता और चेतावनी को गम्भीरता से लेना चाहिये।

आज के विश्व में जनसांख्यिकी भी एक युद्ध है, जिसकी उपेक्षा करना आत्मघाती होगा। विशेषकर हिन्दुओं के लिये जिनका दुनिया में मुख्यत: एक ही देश है। किन्तु दु:ख की बात है कि जब इस पर कोई हिन्दू चिंता दिखाता है तो उसे पिछड़ा, दकियानूसी, जनसंख्या विस्फोट से नासमझ या घृणा का प्रचारक आदि बताकर हंसी उड़ाई जाती है। भारतीय जनसांख्यिकी की स्थिति पर एपी जोशी, एमडी श्रीनिवास तथा जेके बजाज ने अपने विस्तृत अध्ययन 'रिलीजियस डेमोग्राफी ऑफ इंडिया (2003) से पाया है कि भारत के हर प्रदेश में मुस्लिम जनसंख्या दूसरे किसी भी समुदाय की तुलना में अधिक गति से बढ़ी है। सन् 1993 में भारत में मुस्लिम जनसंख्या 11 प्रतिशत थी, जो केवल 15 वर्षों में 14 प्रतिशत हो गई। पड़ोसी पाकिस्तान और बंग्लादेश में जन्म दर और भी तीव्र है। जिससे भारत वर्ष के सम्पूर्ण भूखण्ड में अनुमान से भी कम समय में मुस्लिम जनसंख्या हिन्दुओं के बराबर हो जाएगी। दो फ्रांसीसी विद्वानों युसूफ कोरबेज तथा इमानुएल टोंड ने अपनी पुस्तक 'लरौदेवू दे सिविल जेशों' (सभ्यताओं का मिलन 2007) में भी ऐसा ही हिसाब दिया है। इस पर चिंता करने के बजाए हिन्दू परिवारों के जन्में सेक्यूलर वामपंथी-उदारवादी पूरी बात को हंसी में उड़ाने की कोशिश करते हैं। क्या सुशिक्षित हिन्दुओं में अपने समुदाय की सामूहिक आत्महत्या भावना का मनोरोग डेथ-विश फैल गया है? नहीं तो केरल के सुशिक्षित ईसाई समुदाय की चेतावनी पर वह ध्यान क्यों नहीं दे रहे?'

जिस जनसांख्यिकी बिन्दु पर दुनिया का सबसे बड़ा आबादी समुदाय ईसाई इतना चिंतित है, ठीक उसी विषय पर उससे अधिक संकट झेलने वाले हिन्दू समुदाय के बौद्धिक उलटा प्रयास कर रहे हैं। हमारे जो बौद्धिक और नेता दिन-रात परिवार नियोजन और आबादी वृद्धि की चिंता करते रहते हैं क्या उन्होंने ईसाई नेताओं को फटकारा कि वे आबादी वृद्धि को प्रोत्साहन देकर समस्या बढ़ा रहे हैं? या उन्होंने कभी मुस्लिमों को जनसंख्या नियंत्रण करने को (शेष पृष्ठ 31 पर)

नारद के भक्ति दर्शन में पत्रकारिता के सिद्धांत

❑ प्रो. बृजकिशोर कुठियाला

सभी पुराणों में महर्षि नारद एक मुख्य व अनिवार्य भूमिका में प्रस्तुत हैं। उन्हें देवर्षि की संज्ञा दी गई, परन्तु उनका कार्य देवताओं तक ही सीमित नहीं था। वे दानवों और मनुष्यों के भी मित्र, मार्गदर्शक, सलाहकार और आचार्य के रूप में उपस्थित हैं। परमात्मा के विषय में संपूर्ण ज्ञान प्रदान करने वाले दार्शनिक को नारद कहा गया है। महाभारत में भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा कि नारद आदर्श व्यक्तित्व हैं। श्री कृष्ण ने उग्रसेन से कहा कि नारद की विशेषताएं अनुकरणीय हैं।

पुराणों में नारद को भागवत संवाददाता के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह भी सर्वमान्य है कि नारद की ही प्रेरणा से वाल्मीकि ने रामायण जैसे महाकाव्य और व्यास ने भागवत गीता जैसे संपूर्ण भक्ति काव्य की रचना की थी। ऐसे नारद को कुछ मूढ़ लोग कलह प्रिय के रूप में भी प्रस्तुत करते हैं, परन्तु नारद जब-जब कलह कराने की भूमिका में आते हैं तो उन परिस्थितियों का गहरा अध्ययन करने से सिद्ध होता है कि नारद ने विवाद और संघर्ष को भी लोक कल्याण के रूप में प्रयोग किया है। नारद कई रूपों में श्रेष्ठ व्यक्तित्व प्रदर्शित करते हैं। संगीत में अपनी अपूर्णता ध्यान में आते ही उन्होंने कठोर तपस्या और अभ्यास से एक उच्च कोटि के संगीतज्ञ बनने को भी सिद्ध किया। उन्होंने संगीत गन्धर्वों से सीखा और 'नारद संहिता' ग्रंथ की रचना की। घोर तप करके विष्णु से संगीत का वरदान प्राप्त किया। वे तत्व ज्ञानी महर्षि थे। नारद के भक्ति सूत्रों में उनके परमात्मा व भक्त के संबंधों की व्याख्या से वे एक दार्शनिक के रूप में सामने आते हैं। परन्तु नारद अन्य ऋषियों, मुनियों से इस प्रकार से भिन्न हैं कि उनका कोई अपना आश्रम नहीं है। वे निरंतर प्रवास पर रहते हैं। परन्तु यह प्रवास निजी नहीं है। इस प्रवास में भी वे समकालीन महत्वपूर्ण देवताओं, मानवों व असुरों से संपर्क करते हैं और उनके प्रश्न, उनके वक्तव्य व उनके कटाक्ष सभी को दिशा देते हैं। उनके हर परामर्श में और प्रत्येक वक्तव्य में कहीं-न-कहीं लोकहित झलकता है। उन्होंने दैत्य अंधक को भगवान शिव द्वारा मिले वरदान को अपने ऊपर इस्तेमाल करने की सलाह दी। रावण को बाली की पूंछ में उलझने पर विवश किया और कंस को सुझाया की देवकी के बच्चों को मार डाले। वह कृष्ण के दूत बनकर इन्द्र के पास गए और उन्हें कृष्ण को पारिजात से वंचित रखने का अहंकार त्यागने की सलाह दी। यह और इस तरह के अनेक परामर्श नारद के विरोधाभासी व्यक्तित्व को उजागर करते दिखते हैं। परन्तु समझने की बात यह है कि कहीं भी नारद का कोई निजी स्वार्थ नहीं दिखता है। वे सदैव सामूहिक कल्याण की नेक भावना रखते हैं। उन्होंने आसुरी शक्तियों को भी अपने विवेक का लाभ पहुंचाया। जब हिरण्यकशिपु तपस्या करने के लिए मंदाक पर्वत पर चले गए तो देवताओं ने दानवों की पत्नियों व महिलाओं का दमन प्रारंभ कर दिया, परन्तु दूरदर्शी नारद ने हिरण्य की पत्नी की सुरक्षा की जिससे प्रह्लाद का जन्म हो सका। परन्तु उसी प्रह्लाद को अपनी आध्यात्मिक चेतना से प्रभावित करके हिरण्यकशिपु के अंत का साधन बनाया।

इन सभी गुणों के अतिरिक्त नारद की जिन विशेषताओं की ओर कम ध्यान गया है वह है उनकी 'संचार' योग्यता व क्षमता। नारद ने 'वाणी' का प्रयोग इस प्रकार किया। जिससे घटनाओं का सृजन हुआ। नारद द्वारा प्रेरित हर घटना का परिणाम लोकहित में निकला। इसलिए वर्तमान संदर्भ में यदि नारद को आज तक के विश्व का सर्वश्रेष्ठ 'लोक संचारक' कहा जाये तो कुछ भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। नारद के हर वाक्य, हर वार्ता और हर घटनाक्रम का विश्लेषण करने से यह बार-बार सिद्ध होता है कि वे एक अति निपुण व प्रभावी 'संचारक' थे। दूसरा उनका संवाद शत-प्रतिशत लोकहित में रहता था। वे अपना हित तो कभी नहीं देखते थे, उन्होंने समूहों पर जातियों आदि का भी अहित नहीं साधा। उनके संवाद में हमेशा लोक कल्याण की भावना रहती थी। तीसरे, नारद द्वारा

रचित भक्ति सूत्र में 84 सूत्र हैं। प्रत्यक्ष रूप से ऐसा लगता है कि इन सूत्रों में भक्ति मार्ग का दर्शन दिया गया है और भक्त ईश्वर को कैसे प्राप्त करे?यह साधन बताए गए हैं। परन्तु इन्हीं सूत्रों का यदि सूक्ष्म अध्ययन करें तो केवल पत्रकारिता ही नहीं पूरे मीडिया के लिए शाश्वत सिद्धांतों का प्रतिपालन दृष्टिगत होता है। नारद भक्ति सूत्र का 15वां सूत्र इस प्रकार से है:

तल्लक्षणानि वच्यन्ते नानामतभेदात॥

अर्थात मतों में विभिन्नता व अनेकता है, यही पत्रकारिता का मूल सिद्धांत है। इसी सूत्र की व्याख्या नारद ने भक्ति सूत्र 16 से 19 तक लिखी है और बताया है कि व्यास, गर्ग, शांडिल्य आदि ऋषिमुनियों ने भक्ति के विषय में विभिन्न मत प्रकट किए हैं। अंत में नारद ने अपना मत भी प्रकट किया है, परन्तु उसी के साथ यह भी कह दिया कि किसी भी मत को मानने से पहले स्वयं उसकी अनुभूति करना आवश्यक है और तभी विवेकानुसार निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए। वर्तमान में भी एक ही विषय पर अनेक दृष्टियां होती हैं, परन्तु पत्रकार या मीडिया कर्मी को सभी दृष्टियों का अध्ययन करके निष्पक्ष दृष्टि लोकहित में प्रस्तुत करनी चाहिए। यह 'आदर्श पत्रकारिता' का मूल सिद्धांत हो सकता है।

नारद द्वारा रचित भक्ति सूत्र में 84 सूत्र हैं। प्रत्यक्ष रूप से ऐसा लगता है कि इन सूत्रों में भक्ति मार्ग का दर्शन दिया गया है और भक्त ईश्वर को कैसे प्राप्त करे? यह साधन बताए गए हैं। परन्तु इन्हीं सूत्रों का यदि सूक्ष्म अध्ययन करें तो केवल पत्रकारिता ही नहीं पूरे मीडिया के लिए शाश्वत सिद्धांतों का प्रतिपालन दृष्टिगत होता है।

आज की पत्रकारिता में मीडिया को सर्वशक्तिमान और सर्वगुण सम्पन्न संवाद के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सबको मालूम है कि यह भ्रम है। मीडिया पूरे सामाजिक संवाद की व्यवस्थाओं का केवल एक अंश हो सकता है और मीडिया की अपनी सीमाएं भी है। भक्ति सूत्र 20 में नारद ने कहा है कि :

अस्त्येवमेवम् ॥

अर्थात् यही है, परन्तु इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। यह पत्रकारिता की सीमा का द्योतक है। इसी प्रकार सूत्र 26 में कहा गया कि :

फलरूपत्वात् ॥

अर्थात् पत्रकारिता संचार का प्रारंभ नहीं है यह तो सामाजिक संवाद का परिणाम है। यदि पत्रकारिता को इस दृष्टि से देखा जाए तो पत्रकार का दायित्व कहीं अधिक हो जाता है। सूत्र 43, पत्रकारिता के लिए मार्गदर्शक हो सकता है :

दु:संग: सर्वथैव त्याज्य:

नकारात्मक पत्रकारिता को अनेक विद्वानों और श्रेष्ठजनों ने नकारा। जबकि पश्चिम दर्शन पर आधारित आज की पत्रकारिता केवल नकारात्मकता को ही अपना आधार मानती है और 'कुत्ते को काटने' को समाचार मानती है। परन्तु नारद ने इस श्लोक में कहा कि हर हाल में बुराई त्याग करने योग्य है। उसका प्रतिपालन या प्रचार-प्रसार नहीं होना चाहिए। नकारात्मक पत्रकारिता की भूमिका समाज में विष की तरह है। सूत्र 46 में :

कस्तरति कस्तरति मायाम्? य: सङ्गांस्त्यजति यो महानुभावं सेवते, निर्ममो भवति ॥

नारद ने कहा कि बुराई लहर के रूप में आती है परन्तु शीघ्र ही वह समुद्र का रूप ले लेती है। आज समाचार वाहिनियों में अपराध समाचार की यही कहानी बनती दिखती है। सूत्र 51 में नारद अभिव्यक्ति की अपूर्णता का वर्णन करते हैं :

अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूपम् ॥

अर्थात् वास्तविकता या संपूर्ण सत्य अवर्णनीय है इसलिए पत्रकारिता में अधूरापन तो रहेगा ही। पाठक, दर्शक व श्रोता को पत्रकारिता की इस कमी की यदि अनुभूति हो जाती है तो समाज में मीडिया की भूमिका यथार्थ को छूयेगी। इसी बात को सूत्र 52 में नारद ने अलग तरह से प्रस्तुत किया है :

मूकास्वादनवत् ॥

नारद का कहना है कि इस सृष्टि में अनेक अनुभव ऐसे हैं जिनकी अनुभूति तो है परन्तु अभिव्यक्ति नहीं है। व्याख्या करने वाले विद्वानों ने इसे 'गूंगे का स्वाद' लेने की स्थिति की तरह वर्णन किया है। नारद भक्ति के सूत्र 63 से मीडिया की विषय-वस्तु के बारे में मार्गदर्शन प्राप्त होता है :

स्त्रीधननास्तिकवैरिचरित्रं न श्रवणीयम् ॥

नारद ने संवाद में कुछ विषयों का निषेध किया है। वह हैं (1) स्त्रियों व पुरुषों के शरीर व मोह का वर्णन (2) धन, धनियों व धनोपार्जन का वर्णन (3) नास्तिकता का वर्णन (4) शत्रु की चर्चा । आज तो ऐसा लगता है कि मीडिया के लिए

विषय-वस्तु इन चारों के अतिरिक्त है ही नहीं। सूत्र 72 एकात्मकता को पोषित करने वाला अत्यंत सुंदर वाक्य है जिसमें नारद समाज में भेद उत्पन्न करने वाले कारकों को बताकर उनको निषेध करते हैं।

नास्ति तेषु जातिविद्यारूपकुलधनक्रियादिभेदः।।

अर्थात् जाति, विद्या, रूप, कुल, धन, कार्य आदि के कारण भेद नहीं होना चाहिए। पत्रकारिता किसके लिए हो व किन के विषय में हो यह आज एक महत्वपूर्ण विषय है। जिसका समाधान इस सूत्र में मिलता है। राजनेताओं, फिल्मी कलाकारों व अपराधियों का महिमा मंडन करती हुई पत्रकारिता समाज के वास्तविक विषयों से भटकती है। यही कारण है कि जेसिकालाल की हत्या तो न केवल पत्रकारिता की लगातार ब्रेकिंग न्यूज बनती है, उसके संपादकीय लेख और यहां तक की फिल्म भी बनती है, परन्तु एक आम किसान की आत्महत्या केवल एक-दो कालम की खबर में ही सिमट जाती है। जब आत्महत्या का राजनीतिकरण होता है तो वह फिर से मुख्य पृष्ठ पर लौट आती है।

एक ही विषय पर अनेक दृष्टियां होती हैं, परन्तु पत्रकार या मीडिया कर्मी को सभी दृष्टियों का अध्ययन करके निष्पक्ष दृष्टि लोकहित में प्रस्तुत करनी चाहिए। यह 'आदर्श पत्रकारिता' का मूल सिद्धांत हो सकता है। आज की पत्रकारिता में मीडिया को सर्वशक्तिमान और सर्वगुण सम्पन्न संवाद के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सबको मालूम है कि यह भ्रम है।

आज की पत्रकारिता व मीडिया में बहसों का भी एक बड़ा दौर है। लगातार अर्थहीन व अंतहीन चर्चाएं मीडिया पर दिखती हैं। विवाद को अर्थहीन बताते हुए नारद ने सूत्र 75, 76 व 77 में परामर्श दिया है कि वाद-विवाद में समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। क्योंकि वाद-विवाद से मत परिवर्तन नहीं होता है। उन्होंने कहा :

बाहुल्यावकाशादनियतत्वाच्च ।।

भक्तिशास्त्राणि मननीयानि,

तदुद्बोधककर्माण्यपि च करणीयानि ।।

सुखदु:खेच्छालाभादित्यक्ते काले प्रतीक्ष्यमाणे क्षणार्द्धमपि व्यर्थ न नेयम्

सूत्र 78 में नारद ने कुछ गुणों का वर्णन किया है जो व्यक्तित्व में होने ही चाहिए। पत्रकारों में भी इन गुणों का समावेश अवश्य लगता है।

अहिंसासत्यशौचदयास्तिक्यादिचारियाणि परिपालनीयानि।।

यह गुण है अहिंसा, सत्य, शुद्धता, संवेदनशीलता व विश्वास।

सूत्र 71 अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होता है इसमें नारद बताते हैं कि यह सब कुछ हो जाये (अर्थात् नारद के परामर्श को पूर्ण रूप से मान लिया जाए) तो क्या होगा?नारद के अनुसार इस स्थिति में आनन्द ही आनन्द होगा। पितर आनन्दित होते हैं, देवता उल्लास में नृत्य करते हैं और पृथ्वी मानो स्वर्ग बन जाती है। आज के मीडिया की यह दृष्टि नहीं है, यह हम सब जानते हैं।

पत्रकारिता से ही सारे मीडिया में सृजन की प्रक्रिया होती है परन्तु सृजन के लिए किस प्रकार की प्रवृत्तियां होनी चाहिए?आज तो सारा सृजन साहित्य, कला, चलचित्र निर्माण, विज्ञापन या पत्रकारिता सभी अर्थ उपार्जन की प्रवृत्ति से होता है। जिसमें असत्य, छल, कपट, दिखावा व बनावटीपन मुख्य हैं। नारद के भक्ति सूत्र 60 में सृजनात्मक प्रवृत्तियों की चर्चा है, सृजनात्मकता की प्रक्रिया का उल्लेख इस तरह है :

शान्तिरूपात्परमानन्दरूपाच्च।।

'सत्' अर्थात अनुभव 'चित्' अर्थात चेतना और 'आनन्द' अर्थात अनुभूति। अर्थात पत्रकारिता की प्रक्रिया भी ऐसी ही है। वह तथ्यों को समेटती है। उनका विश्लेषण करती है व उसके बाद उसकी अनुभूति करके दूसरों के लिए अभिव्यक्त होती है परन्तु इसका परिणाम दुख, दर्द, ईर्ष्या, प्रतिद्वंद्विता, द्वेष व असत्य को बांटना हो सकता है या फिर सुख, शांति, प्रेम, सहनशीलता व मैत्री का प्रसाद हो सकता है। कौन सा विकल्प चुनना है यह समाज को तय करना है। नारद के भक्ति सूत्रों का संक्षिप्त विश्लेषण पत्रकारिता की दृष्टि से यहां किया गया है। आवश्यकता है कि इन विषयों का गहन अध्ययन हो और एक वैकल्पिक पत्रकारिता के दर्शन की प्रस्तुति पूरी मानवता को दी जाए। क्योंकि वर्तमान मीडिया ऐसे समाज की रचना करने में सहायक नहीं है। पत्रकारिता की यह कल्पना बेशक श्रेष्ठ पुरुषों की रही हो परन्तु इसमें हर साधारण मानव की सुखमय और शांतिपूर्ण जीवन की आकांक्षा के दर्शन होते हैं। ❑

संघ की व्याप्ति, शक्ति और रीति

❑ मा.गो. वैद्य

संघ, अर्थात् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। आज हमारे देश में या अन्यत्र अनेक संस्थाएं कार्य कर रही हैं, पर उनके पैमाने पर संघ नहीं बैठता। काव्यालंकारों में 'अनन्वय' नाम का एक अलंकार है। जिसकी तुलना केवल उसी से ही हो सकती है, अन्य किसी से नहीं। उसका विशिष्ट उदाहरण है-

गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः।
रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव॥

अर्थात् आकाश आकाश के समान ही है, समुद्र समुद्र के समान ही है और राम-रावण युद्ध भी राम-रावण युद्ध के समान ही है। इसी प्रकार संघ भी बस संघ ही है, उसकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती।

संघ कितना बड़ा है, कितना व्यापक है, यह बताते हुए, कोई भी संघ की शाखा कितनी, वह कितने स्थानों पर लगती है, यह बताएगा, यह उचित ही है। हाल ही में सम्पन्न हुई संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में जो आंकड़े प्राप्त हुए, उनके अनुसार 27997 स्थानों पर संघ की 40891 शाखाएं लगती हैं। यह नियमित लगने वाली दैनिक शाखा है। सप्ताह में एक बार या माह में एक बार होने वाले मिलनों की संख्या 15000 है। कुल मिलाकर 55891 स्थानों पर संघ के कार्यकर्त्ता नित्य एकत्र होते हैं। हिन्दुस्तान या दुनिया में है ऐसी कोई संस्था, जिसके छह लाख से अधिक स्वयंसेवक नियमित रूप से, निश्चित समय पर एकत्रित होते हों। मेरी जानकारी में नहीं। किसी को पता हो तो मुझे बताए, मुझे मेरा अज्ञान दूर होने का आनन्द होगा।

मौलिक संकल्पना : लेकिन, यह शाखा ही संघ की सम्पूर्ण व्याप्ति नहीं है। वह तो केवल 'पॉवर हाउस' अर्थात् ऊर्जा निर्मिती का केन्द्र है। ऊर्जा वितरण के लिये 'पॉवर हाऊस' सक्षम, समर्थ और नित्य सिद्ध होना ही चाहिये। तभी उस ऊर्जा से हमारे घरों में प्रकाश होगा, ट्यूब और बल्ब जलेंगे, यंत्र चलेंगे, बड़ी-बड़ी मिलें चलेंगी। इसलिये संघ की रचना में 'पॉवर हाऊस' जैसी इन शाखाओं का बहुत महत्व है। इससे ही ऊर्जा लेकर समाज-जीवन के अनेक क्षेत्र आज प्रकाशित हैं।

एक मूलभूत संकल्पना नित्य ध्यान में रखनी चाहिये। वह यह कि संघ सम्पूर्ण समाज का संगठन है। यह समाज 'का' संगठन है, समाज 'में' संगठन नहीं। यहां 'का' और 'में' का अंतर समझना चाहिये। कोई भी समाज, विशेष रूप में प्रगतीशील समाज कभी भी एक समान नहीं होता। वह मिश्रित होता है। समाज-जीवन के विविध क्षेत्र होते हैं। राजनीति, धर्म, शिक्षा, उद्योग, खेती, कारखाने आदि-आदि। संघ के 'पॉवर हाउस' में से ऊर्जा लेकर संघ के स्वयंसेवकों ने यह सब क्षेत्र अपनी अपनी शक्ति के अनुसार प्रकाशित और प्रभावित किये हैं। कोई उन्हें आनुषंगिक संगठन कहता है, कोई विविध गतिविधि मानता है। कोई 'संघ परिवार' मानता है। किसी भी शब्द का प्रयोग करें लेकिन उसके मूल ऊर्जास्रोत का स्मरण रखना आवश्यक है।

संघ की व्याप्ति : अ.भा. प्रतिनिधि सभा में जिन्होंने अपना वृत्त-निवेदन (वार्षिक प्रगति रपट की प्रस्तुति) किया, ऐसी संस्थाओं की संख्या 35 थी। सामान्य लोगों को केवल भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिन्दू परिषद ही दिखती है। जरा दृष्टि व्यापक की तो वनवासी कल्याण आश्रम, राष्ट्र सेविका समिति, अ.भा. विद्यार्थी परिषद, भारतीय मजदूर संघ, स्वदेशी जागरण मंच भी नजर आ सकते हैं। लेकिन विश्व विभाग नजर आएगा?और राष्ट्रीय सिक्ख संगत? या सेवा भारती, विद्या भारती, सीमा जागरण मंच, पूर्व सैनिक सेवा परिषद, इतिहास संकलन समिति, प्रज्ञा प्रवाह.....? जिनके नाम के अंत में 'भारती' शब्द है, इससे संस्कृत भारती, सहकार भारती, आरोग्य भारती, लघु उद्योग भारती, क्रीड़ा भारती का स्मरण होगा? इनकी ही जानकारी नहीं होगी तो नेत्रहीनों को

नेत्र पूर्ति करने वाली 'सक्षम', स्वदेशी विज्ञान, साहित्य परिषद, सामाजिक समरसता मंच और एक विशेष नाम लेना हो तो 'आयसीसीएस' कितने लोगों को ज्ञात होगी?

विश्वव्यापी संघ : क्या है यह आईसीसीएस? 'इन्टरनेशनल सेंटर फार कल्चरल स्टडीज' नामक इस संस्था का हाल ही में (4 से 7 मार्च 2012) हरिद्वार में सम्मेलन हुआ। जिन्होंने ईसाई मत का प्रसार होने के पूर्व की अपनी संस्कृति अभी भी संजोए रखी है। ऐसी 50 संस्कृति-परम्पराओं के 400 प्रतिनिधि वहां आए थे। उनमें न्यूजीलैंड के माओरी थे, अमरीका के मायन और नॅव्जो थे। यूरोप में जिनको 'पेगन' मतलब 'झूठे देवताओं की पूजा करने वाले' कहकर अवहेलना की जाती है, वे भी थे। लिथुयानिया के रोमुवा और बाली के हिन्दू थे। सन् 2002 में दिल्ली में मुझे इस समूह के एक लेखक फ्रेडरिक लॅमण्ड मिले थे। उन्होंने मुझे अपनी पुस्तक 'रिलीजियन्स विदाउट बिलीफस' भेंट की थी। वे यूरोप के ऑस्ट्रिया देश के निवासी हैं। संघ की ओर से इन संस्कृति-परम्पराओं का रक्षण और संवर्धन किया जा रहा है। हिन्दू संस्कृति-परम्पराओं से उनका कितना साम्य है, यह उनके ध्यान में आया है। यह एक प्रकार से संघ की विश्व दृष्टि ही है।

यह शाखा ही संघ की सम्पूर्ण व्याप्ति नहीं है। वह तो केवल 'पॉवर हाउस' अर्थात् ऊर्जा निर्मिती का केन्द्र है। ऊर्जा वितरण के लिये 'पॉवर हाऊस' सक्षम, समर्थ और नित्य सिद्ध होना ही चाहिये। तभी उस ऊर्जा से हमारे घरों में प्रकाश होगा, ट्यूब और बल्ब जलेंगे, यंत्र चलेंगे, बड़ी-बड़ी मिलें चलेंगी। इसलिये संघ की रचना में 'पॉवर हाऊस' जैसी इन शाखाओं का बहुत महत्व है। इससे ही ऊर्जा लेकर समाज-जीवन के अनेक क्षेत्र आज प्रकाशित हैं।

भारत के अतिरिक्त विश्व के 32 देशो में हिन्दू स्वयंसेवक संघ की 528 शाखा है। अमेरिका में 140 तो इंग्लैंड में 70 शाखाएं हैं। गत जनवरी माह में हिन्दू स्वयंसेवक संघ की ओर से अमेरिका में 'सूर्यनमस्कार यज्ञ' का आयोजन किया गया था। उसमें 13191 प्रतिभागियों ने भाग लिया और 10 लाख 38 हजार 842 सूर्यनमस्कार किये। अमेरिका के एक राज्य के गवर्नर, दो कांग्रेसमैन (हमारी भाषा में सांसद) और 20 शहरों के महापौरों ने अधिकृत सूचना देकर इस यज्ञ में सहभागिता की। संघ के नाम में राष्ट्रीय शब्द है, लेकिन उसका विचार और संगठन चारित्र्य अंतर्राष्ट्रीय बन गया है।

संघ की रीत : अ. भा. वनवासी कल्याण आश्रम का नाम अब सर्व परिचित है। वनांचल में उसके द्वारा हजारों एकल विद्यालय चलाए जा रहे हैं। विहिप, विद्यार्थी परिषद भी एकल विद्यालय चलाते हैं, लेकिन उसमें वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य सबसे अधिक है। वनवासी कल्याण आश्रम के कारण ईसाई मिशनरियों के मतान्तरण के कार्यक्रम पर रोक लगी है। पूर्वांतर भारत के अरुणाचल, मेघालय, असम, त्रिपुरा, नागालैंड, मिजोरम, मणिपुर आदि छोटे-छोटे राज्यों में अनेक जनजातियां हैं। उनकी अपनी कुछ विशेषताएं हैं, तो कुछ साम्य भी है। इस साम्य (समानता) का आधार लेकर अपनी परम्परा बचाए रखने के लिये उन्होंने अपनी संस्था बनाई है। विक्रम सिंह जमातीया उनके नेता हैं। यह सब वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से हुआ है। 1 दिसम्बर, 2011 को अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पासीघाट में 'दोन्यीपोलो' (अर्थात् चंद्र और सूर्य) 'एलाम केबांग' (पारम्परिक धर्म संस्कृति संगठन) नामक संस्था का रजत जयंती समारोह सम्पन्न हुआ। वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष जगदेवराम उरांव और अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री नाबम तुकी उसमें उपस्थित थे। वनवासी कल्याण आश्रम की व्याप्ति ऐसी है।

27 दिसम्बर 2011 से 1 जनवरी, 2012 तक कल्याण आश्रम ने पुणे में 'वनवासी क्रीड़ा महोत्सव' का आयोजन किया था। उसमें 2038 खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिनमें 725 महिलाएं थी। ये सब खिलाड़ी 34 राज्यों से आए थे। कोई कहेगा कि इसमें विशेष क्या है? कोई भी क्रीड़ा स्पर्धा आयोजित कर सकता है। लेकिन यहां संघ की एक विशेषता प्रकट हुई। एक दिन पुणे के 1300 परिवारों ने इन खिलाड़ियों के लिये अपने घर से भोजन लाकर आत्मीयता और बंधुता का परिचय दिया। इन परिवारों की केवल महिलाएं ही भोजन लेकर नहीं आई थी बल्कि पूरा परिवार ही आया था और एक परिवार के साथ बैठकर वनवासी खिलाड़ियों ने भोजन का आनन्द लिया। यह है संघ की विशेषता। यह है संघ की रीत।

सीमा जागरण : हमारे देश की सीमा शत्रु राष्ट्रों की ओर से खतरे में है। उसकी रक्षा के लिये हमारे सैनिक सिद्ध है।

लेकिन, जैसे सैनिक सिद्ध है, वैसे ही उस सीमावर्ती प्रदेश की जनता भी है?सैनिकों के साथ सम्बन्ध और जनता में धैर्य बंधाने का यह महत्वपूर्ण कार्य सीमा जागरण मंच करता है। गत वर्ष भारमीय सीमा की 500 चौकियों पर रक्षाबंधन का कार्यक्रम हुआ। पंजाब, जम्मू-कश्मीर और राजस्थान की सीमा पर प्रतिवर्ष सेना भर्ती प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जाते हैं। लोगों में जागृति निर्माण हो इसके लिये 'सीमा सुरक्षा चेतना यात्रा' भी निकाली जाती है। गत वर्ष 61 स्थानों पर 'सीमा सुरक्षा सम्मेलन' हुए। दो हजार गांवों में सभाएं हुई। तीन सौ से अधिक पाठशालाओं में प्रदर्शनी लगाकर विद्यार्थियों के बीच सीमा सुरक्षा के बारे में जागृति पैदा की गई। भविष्य में अपनी सीमाएं सिकुड़ने नहीं देंगे, ऐसा संकल्प लोगों के मन में पिरोया गया। सागरी सीमा पर भी मंच का काम चल रहा है।

केवल राष्ट्र के लिये : संघ के कार्यकर्ताओं ने 'पॉवर हाउस' से ऊर्जा लेकर समाज जीवन के जो जो क्षेत्र प्रकाशमान किये, उन सबका समग्र परिचय करा देने की बात सोचें, तो एक बड़ा ग्रंथ ही बनेगा। वैसा ग्रंथ निर्माण करने में कोई आपति भी नहीं है। लेकिन संघ प्रेरित कार्य प्रचार के भरोसे नहीं चलते। प्रसिद्धि तो छोड़ दें, जान की परवाह किये बिना कार्यकर्ता अपने सेवा के क्षेत्र में मजबूती से खड़े हैं। किस लिये? स्वयं के लिये? मंत्रिपद प्राप्त करने के लिये? या समाचारपत्रों में नाम आने के लिये? नहीं !! उनकी कोई व्यक्तिगत आकांक्षा ही नहीं है। अपना देश, अपना राष्ट्र, अपना समाज एकसंघ बने, परस्पर सामंजस्य और सहयोग से बर्ताव करने वाला बने और इस रीति से अपने एक राष्ट्रीयत्व की अनुभूति सब के अंतरंग में बने, इसके लिये यह सब प्रयास है। यह नि:स्वार्थ प्रयास ईश्वर का अधिष्ठान है और आशीर्वाद भी है। इसलिये सफलता ही उसकी नियति है।

संघ प्रेरित कार्य प्रचार के भरोसे नहीं चलते। प्रसिद्धि तो छोड़ दें, जान की परवाह किये बिना कार्यकर्ता अपने सेवा के क्षेत्र में मजबूती से खड़े हैं। किस लिये? स्वयं के लिये? मंत्रिपद प्राप्त करने के लिये? या समाचारपत्रों में नाम आने के लिये? नहीं !! उनकी कोई व्यक्तिगत आकांक्षा ही नहीं है। अपना देश, अपना राष्ट्र, अपना समाज एकसंघ बने, परस्पर सामंजस्य और सहयोग से बर्ताव करने वाला बने और इस रीति से अपने एक राष्ट्रीयत्व की अनुभूति सब के अंतरंग में बने, इसके लिये यह सब प्रयास है।

अनुशासन का रहस्य : संघ की एक विशिष्ट पहचान है-अनुशासन। संघ में यह सर्वज्ञात है, लेकिन उसके लिये दण्डात्मक प्रावधान नहीं है। एक पुरानी बात बताता हूं, 1952-53 की। उस समय गौहत्या बंदी के लिये संघ ने हस्ताक्षर संग्रह किया था। तब अनेक गौभक्त तत्कालीन सरसंघचालक श्रीगुरुजी से मिलने आते थे। एक बार लाला हरदेव सहाय के साथ एक साधू जी आए। उन्होंने श्रीगुरुजी से कहा, 'आप ऐसा एक आदेश निकालें कि, संघ का कोई भी स्वयंसेवक अपने घर 'डालडा' का प्रयोग नहीं करेगा।' उस समय डालडा नया नया ही बाजार में आया था। गुरुजी ने कहा, 'ऐसी आज्ञा निकालने की संघ में पद्धति नहीं है।' उस साधू महाराज को बहुत अचरज हुआ। वह बोले, 'आप यह क्या कह रहे हैं?मैं जहां जहां जाता हूं, वहां मुझे यही उत्तर मिलता है कि संघ की आज्ञा होगी, तो हम ऐसा करेंगे।' इस पर गुरुजी ने कहा, 'ऐसी आज्ञा के लिये हमारे पास कौन-सी दण्डशक्ति (प्रावधान) है?किसी ने आज्ञा का पालन नहीं किया, तो हम उसे क्या दण्ड दे सकते हैं?साधू जी ने पूछा, 'फिर आपके संघ में इतना अनुशासन कैसे है?' गुरुजी ने कहा, 'हम प्रतिदिन संघ स्थान पर एकत्र आते हैं। हमारी पद्धति से कबड्डी आदि खेलते हैं, उससे ही अनुशासन निर्माण होता है।' ऐसा लगा कि उन साधू महाराज का समाधान हो गया।

मुझे इसके साथ और एक उदाहरण जोड़ना है, वह है संघ में श्रेष्ठ अधिकारियों का व्यवहार। एक सामान्य मुख्य शिक्षक 'दक्ष' कहता है और सरसंघचालक से लेकर सब ज्येष्ठ श्रेष्ठ पदाधिकारी सीधे खड़े हो जाते हैं। वे सब शिविरों में सबके साथ रहते हैं। सब जो भोजन करते हैं, वही वे भी करते हैं। सबके समान गणवेश पहनते हैं। आचरण की इस समानता से एक अलग वातावरण निर्माण होता है। समता भाव का निर्माण होता है। उससे अनुशासन निर्माण होता है। वह स्वयं द्वारा स्वीकार किया अनुशासन होता है। वह भय से निर्माण किया हुआ नहीं होता। कार्यक्रम शुरू होगा का अर्थ है समय पर ही शुरू होगा। कई लोगों को देर से आने में प्रतिष्ठा अनुभव होती है। पर संघ में अलग ही वातावरण होता है। किसी के विरुद्ध अनुशासन भंग की कार्रवाई होने की बात किसी ने सुनी है?नहीं न। कारण, यह अनुशासन स्वयं स्वीकृत है। यही संघ की विशिष्टता है। ❑

लोकायुक्त विधेयक

हिमाचल विधानसभा में लोकायुक्त विधेयक एक संशोधन के साथ पारित कर दिया गया। हिमाचल ने ही पहली बार 1983 में लोकायुक्त बनाया था, लेकिन स्वत: संज्ञान की शक्ति अब दी गई है। लोकायुक्त एफआईआर दर्ज करने और जांच के आदेश दे सकते हैं। अलग इनवेस्टिगेशन विंग होगा और चालान पेश करने के मामले में भी सरकार पर निर्भरता नहीं होगी। इसमें पंच से सीएम तक सबको शामिल किया गया है। शिकायतकर्ता की मौत के बाद भी जांच नहीं थमेगी। ❑

हिमाचल

- सरकार के प्रदेश से बाहर सेवाएं दे रहे जनसेवक भी इसके दायरे में होंगे।
- लोकायुक्त का जांच विंग ही जांच करेगा।
- सुप्रीम कोर्ट के जज या हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश पात्र होंगे।
- नोमिनेशन के अलावा, आवेदन या सर्च कमेटी की ओर से नाम सुझाने का विकल्प होगा।
- आईपीसी एवं भ्रष्टाचार निरोधक कानून के अनुसार ही सजा दी जाएगी।
- हाईकोर्ट के जज को हटाने वाली प्रक्रिया अपनाएगा।

उत्तराखंड

- लोकायुक्त का दायरा प्रदेश में ही है।
- लोकायुक्त में जांच आयोग बनाने की बात कही गई है।
- लोकायुक्त के लिये कोई मशहूर व्यक्ति पात्र होगा।
- उम्मीदवार की नॉमिनेशन होगी।
- लोकायुक्त उम्रकैद की सजा दे सकेगा।
- लोकायुक्त को हटाने के लिये सुप्रीम कोर्ट से जांच करवानी होगी।

सहकार भारती ने मनाया वैशाखी पर्व

कुल्लू जिला सहकार भारती की बैठक संस्था के अध्यक्ष सत्यपाल भटनागर की अध्यक्षता में कुल्लू नगर के आर्य समाज मंदिर में सम्पन्न हुई। बैठक में संगठन मंत्री राजकुमार जैन सहित अन्य पदाधिकारियों ने हिस्सा लिया। वैशाखी पर्व पर हुई इस बैठक में श्री भटनागर ने बताया कि इस दिन खालसा पंथ की स्थापना हुई थी और श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने पंच प्यारे चुने थे। उन्होंने गुरु गोविंद सिंह जी की जीवनी पर प्रकाश डाला।

भारत विकास परिषद् के जिला अध्यक्ष सरदार कुलदीप सिंह कपूर ने सरदार उधम सिंह को याद करते हुए जलियां वाला बाग में हुए नरसंहार की घटना को याद कर ताजा किया। जिला संगठन मंत्री राजकुमार जैन ने भी अपने विचार रखे और कहा कि रामायण और श्री भगवत गीता पर शोध कार्य किया गया है जिसमें बताया गया है कि तत्कालीन जनता में ऐसे कौन से कार्य थे जिनसे वे सुखमय जीवन व्यतीत करते थे। ❑

इस अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : 1. कोहनी के पीछे, 2. हाथी, 3. इरविन रोमैल को, 4. भारत का राष्ट्रीय ध्वज, 5. पांच, 6. सिक्कम में, 7. इंटरनेशनल इंडियन फिल्म एकेडमी, 8. लगभग 68-70 डिग्री सेल्सियस पर, 9. अस्थमा।

With best compliments from

MACLEODS

Macleods Pharmaceuticals Ltd.
Vill.- Theda, Khasuni lodhi Majra Rd,
Tehsil- Nalagarh, Distt. Solan,
Himachal Pradesh-174101
Tel No. 01795-661400

हिमाचल प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम 2011

(हिमाचल प्रदेश राज्य के लोगों के लिये नियत समय सीमा के भीतर सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिये अधिनियम)

-इस अधिनियम के तहत इसके प्रयोजनों के लिये समय-समय पर सेवाओं, सम्बद्ध पदाधिकारियों और नियत समय सीमा को अधिसूचित कर सकेगी।

आवेदक को अभिस्वीकृति जारी करना जरूरी होगा।

1. अभिस्वीकृति प्रारूप पर दी जाएगी।
2. जहां आवेदन सभी प्रकार से पूर्ण हैं, तो आवेदन प्राप्त करने वाला व्यक्ति (अधिकारी) उस समय सीमा का उल्लेख करेगा जिसके बीच सेवा को उपलब्ध करवाने के आवेदन का निपटारा किया जाएगा।
3. यदि आवेदन पत्र में आवश्यक दस्तावेज संलग्न नहीं तो आवेदन प्राप्त करने वाला व्यक्ति बिना किसी समय-सीमा के अभिस्वीकृति में उसका उल्लेख करेगा।

- सेवा को उपलब्ध करवाने के लिये आवेदन के निपटारे की नियत समय सीमा के भीतर आने वाले सार्वजनिक अवकाश समय की गणना करते समय अपवर्जित किये जाएंगे।

-जनसाधारण की सुविधा के लिये प्रारूप में उपलब्ध करवाई जाने वाली सेवाओं की सूचना सम्बद्ध अधिकारी अपने कार्यालय के सूचना बोर्ड पर लगाएगा तथा ऑफिसियल वेबसाइट पर भी प्रदर्शित करेगा।

1. अपील प्राधिकारियों के समक्ष अपील की प्रक्रिया–

- प्रथम अपील प्राधिकारी के समक्ष आवेदक सादे कागज पर बिना किसी फीस के दो प्रतियों में अपील करेगा। द्वितीय अपील प्राधिकारी के समक्ष तीन प्रतियों में अपीलार्थी अपील करेगा जिसमें निम्नलिखित सूचना देनी होगी।

- अपीलार्थी का नाम-पता

-उस सम्बद्ध अधिकारी का नाम जिसने आवेदन की अभिस्वीकृति से इन्कार किया है या आवेदन को नामंजूर किया है अथवा नियत-समय पर सेवा उपलब्ध नहीं करवाई है।

- प्रथम अपील प्राधिकारी का नाम-पता जिसके विनिश्चय अथवा निर्णय न लेने पर द्वितीय अपील दायर की गई है।

- आदेश की प्रति यदि कोई हो जिसके विरुद्ध अपील दायर की गई है।

- अपील के लिये आधार और मांगे गए अनुतोष का उल्लेख या कोई अन्य सुसंगत सूचना का उल्लेख

- अपीलार्थी द्वारा सत्यापन

अपीलों की सुनवाई और निपटारे के लिये प्रक्रिया :

1. अपील के निपटारे के लिये प्रथम अथवा द्वितीय अपील प्राधिकारी सुसंगत दस्तावेजों, लोक-अभिलेखों की जांच करेंगे।
2. अपील प्राधिकारी जैसा वह उचित समझे अपीलार्थी, सम्बद्ध अधिकारी प्रथम अपील प्राधिकारी की जांच कर सकता है।
3. अपील प्राधिकारी निम्न प्रकार से सुनवाई का नोटिस तामिल करवा सकता है।

(क) व्यक्तिगत रूप से निर्देश जारी कर

(ख) अभिस्वीकृति पावती के साथ पंजीकृत डाक द्वारा।

(ग) सम्बद्ध कार्यालय के पदाभिहित अधिकारी के माध्यम से।

(घ) पक्षकारों को सुनवाई की तारीख से पूर्व कम से कम सात दिन का पूर्ववर्ती नोटिस दिया जाएगा।

(ङ) किसी एक पक्ष के अथवा उसके प्रतिनिधि के सुनवाई के दिन अनुपस्थित रहने पर अपीलीय प्राधिकारी पूर्णतया गुणगान के आधार पर मामले का एकपक्षीय निर्णय ले सकता है।

(च) आदेश सार्वजनिक रूप से किये जाएंगे।

(छ) सम्बंधित दस्तावेज फाईल में सुरक्षित रखे जाएंगे। ❑

भारतीय मुस्लिम न करें दूसरी शादी : दारुलउलूम

देश की प्रमुख इस्लामी शिक्षण संस्था दारुल उलूम देवबंद ने भारतीय मुसलमानों से एक पत्नी के जिन्दा रहने पर दूसरी शादी नहीं करने को कहा है। देवबंद का मानना है कि ऐसा करने से दोनों पत्नियों के साथ नाइंसाफी होगी।

देवबंद की ओर से जारी फतवे में कहा गया है कि भारतीय परम्परा में मुसलमानों को एक पत्नी के होते दूसरी शादी न करने की नसीहत।

एक व्यक्ति ने देवबंद से पूछा था, 'अपने कॉलेज के समय से मैं एक युवती से प्रेम करता हूं। लेकिन शादी नहीं हो सकी। अब हम फिर से सम्पर्क में आए हैं और निकाह करना चाहते हैं। मेरी पत्नी और दो बच्चे हैं, ऐसे में दूसरी शादी जायज होगी?' इसके जवाब में देवबंद की ओर से जारी फतवे में कहा गया है, 'शरीयत एक साथ दो पत्नी की इजाजत देता है, लेकिन भारतीय परम्परा में इसकी इजाजत नहीं है। इसलिये जिस समाज में रहते हैं वहां की परम्परा का पालन होना चाहिये।'

उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं दो पत्नियों के होने से व्यक्ति दोनों के साथ जिम्मेदारियों के लिहाज से इंसाफ भी नहीं कर पाता। इस वजह से पहली पत्नी के होते हुए दूसरी शादी का ख्याल मन से निकाल देना चाहिये। ❑

अग्नि-5 का सफल परीक्षण

अग्नि-5 के सफल परीक्षण के बाद भारत अंतर महाद्वीपीय बैलेस्टिक मिसाइल (आईसीबीएम) बनाने वाला दुनिया का पांचवां देश हो गया है। अमेरिका, चीन, फ्रांस और रूस के पास पहले से ही आईसीबीएम है। डीआरडीओ के प्रमुख वीके सारस्वत ने बताया कि मिसाइल अपने लक्ष्य को भेदने में पूरी तरह सफल रही है। उन्होंने बताया कि इस मिसाइल की 85 प्रतिशत तकनीक अपने देश में ही तैयार की गई है। यह एक टन एटमी हथियार ले जाने में सक्षम है और 20 मिनट में पांच हजार किलोमीटर तय करेगी। इसमें कई न्यूक्लियर कारहेड एक साथ छोड़े जा सकेंगे। पूरा एशिया, अफ्रीका और यूरोप भारत के दायरे में होगा। सारस्वत ने बताया कि अग्नि-5 के पहले सफल परीक्षण में 800 वैज्ञानिक, कर्मी और सहायता कर्मचारियों की तीन वर्षों की मेहनत शामिल है। इस मिसाइल को देश के किसी भी कोने में तैनात किया जा सकता है और इसे दुश्मनों के सेटेलाइट को नष्ट करने में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

अग्नि-5 का सफल परीक्षण हमारी सुरक्षा और तैयारियों व विज्ञान की सीमाओं को जानने की मेहनत का एक और मील का पत्थर है। ❑

विद्यार्थियों द्वारा निर्मित यंत्र राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया

गुजरात के मांडवी तहसील के विद्यार्थियों ने किसानों के लिये लाभदायक एक ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है जिसमें फल तोड़ने के लिये वृक्ष पर नहीं चढ़ना पड़ेगा वरन् जमीन पर खड़े-खड़े ही फल उतारे जा सकेंगे। 'मल्टीपर्पज डीवाइस फॉर पीकिंग, स्प्रेईंग एंड कैचींग' नामक यह यंत्र पिछले दिनों पटना में राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शन में आकर्षण का केन्द्र रहा। लोहे की पाईप, पीवीसी पाईप, नट-बोल्ट, फूट पम्प, क्लेम्प आदि का प्रयोग कर बनाए गए इस यंत्र से सांप भी पकड़ा जा सकता है। ❑

भारत का 'अंकोरवाट मंदिर' शीर्ष पर

कम्बोडिया के विश्व प्रसिद्ध अंकोरवाट मंदिर की भारत में बनने जा रही प्रतिकृति को अमेरिकी पत्रिका 'टाइम' ने दुनिया की पांच सबसे आश्चर्यजनक प्रतिकृतियों की सूची में पहला स्थान दिया है। पत्रिका ने भारत के अंकोरवाट मंदिर के बारे में लिखा 'विश्व धरोहरों में शुमार अंकोरवाट मंदिर की प्रतिकृति बिहार में पवित्र गंगा नदी के किनारे बनने जा रही है। एक भारतीय मंदिर ट्रस्ट करीब चालीस एकड़ भूमि पर सौ करोड़ रुपये की लागत से इसका निर्माण कराएगा। पत्रिका ने कहा कि 222 फीट की यह प्रतिकृति दुनिया में सबसे ऊंचा मंदिर हो सकता है। इसका नाम 'विराट अंकोरवाट राम मंदिर' होगा। इसे भगवान विष्णु की बजाए श्रीराम को समर्पित किया जाएगा। परियोजना से जुड़े अधिकारी किशोर कुणाल ने बताया कि जो लोग कंबोडिया जाकर अंकोरवाट मंदिर नहीं देख पाते हैं वे यहीं पर मंदिर की भव्यता और वैभव के दर्शन कर पाएंगे। ❑

रामसेतु पर संतों का दो टूक राष्ट्रीय धरोहर घोषित करे सरकार

16 अप्रैल 2012 को राम सेतु के राष्ट्रीय धरोहर घोषित कराने के मुद्दे को लेकर संतों की एक अहम बैठक में मांग की गई कि राम सेतु को शीघ्र राष्ट्रीय धरोहर घोषित करे सरकार। राजधानी के उदासीन आश्रम में बुलाई गई बैठक के बाद दिल्ली संत महामंडल के महामंत्री महंत नवल किशोर दास जी ने बताया है कि इस बैठक में भगवान श्रीराम द्वारा बनाए गए रामसेतु को लेकर उच्चतम न्यायालय ने जो प्रश्न भारत सरकार के समक्ष रखा है कि राम सेतु को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया जाए या नहीं?उसी पर विचार किया गया। सभी उपस्थित वरिष्ठ संतों ने सर्वसम्मति से निर्णय किया कि बार-बार भारत के प्रधान न्यायालय तथा देशवासियों का बहुमूल्य समय और बर्बाद करे बिना भारत सरकार तुरंत अपनी भावना सर्वोच्च न्यायालय को बता कर विश्व भर की आस्था के केन्द्र, थोरियम के भंडार, राष्ट्रीय सुरक्षा के खतरे, पर्यावरण संकट तथा विश्व की प्राचीनतम धरोहर को नष्ट होने से बचाए। बैठक के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली के मीडिया प्रमुख श्री विनोद बंसल ने बताया है कि इस बैठक में राजधानी के अनेक धार्मिक व सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने भी भाग लिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि संतों की यह बैठक केन्द्र सरकार द्वारा राम सेतु मसले पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय को दिये जाने वाले हां या ना के जवाब में हां कहने में मार्गदर्शक सिद्ध होगी। ❑

उस्मानिया विश्वविद्यालय में 'गोमांस उत्सव'

हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय में गोमांस उत्सव का आयोजन किया गया। गत 15 अप्रैल को वामपंथी छात्र गुटों ने 'बीफ फेस्टिवल' का आयोजन किया था। इसका मकसद छात्रावासों में परोसे जाने वाले खाने के मीनू में गोमांस शामिल कराना था। इसमें दो सौ से अधिक छात्रों और कुछ शिक्षकों ने भी भाग लिया था। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं ने इसके खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। ❑

डॉ. हेडगेवार पर पीएच.डी.

राजस्थान विश्वविद्यालय ने संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार पर एक शोध-प्रबंध को स्वीकृत कर शोधार्थी को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की है। भारत के किसी विश्वविद्यालय ने पहली बार डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार और श्रीगुरु जी पर रिसर्च करवाई है।

'केशवराव हेडगेवार और माधवराव गोलवलकर : एक तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर राजनीति विज्ञान विभाग के अंतर्गत किये गए शोधकार्य के लिये सुश्री चारू मिश्रा को बीते 30 दिसम्बर को पीएच.डी. दी गई। जयपुर के कनोड़िया कॉलेज की राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. ममता शर्मा के निर्देशन में यह प्रशंसनीय शोध हुआ। ❑

स्कूल में धर्म परिवर्तन कार्यक्रम का आयोजन

उत्तर प्रदेश के महाराज गंज शहर के एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल में धर्म परिवर्तन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एवरेस्ट इंग्लिश स्कूल में 6 से 8 अप्रैल तक छुटकारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस आयोजन में आसपास के क्षेत्रों के बंजारा जाति के लोगों को भारी संख्या में आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य उद्बोधन और दीक्षा देने के लिए ईसाई धर्म प्रचारक यानी पादरी रामचंद्र विश्वकर्मा और उनकी पत्नी विमला को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में धर्म परिवर्तन की जानकारी होने पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला प्रचारक लालजी अन्य तीन कार्यकर्ताओं के साथ पहुंचे। चारों ने धर्म परिवर्तन का विरोध किया तो पादरी और स्कूल प्रधानाचार्य के साथ इनका विवाद हो गया। इसी विवाद में मारपीट होने लगी।

घटना की जानकारी होने पर पुलिस ने संघ के जिला प्रचारक लालजी समेत चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पता चला है कि इस कार्यक्रम का आयोजन उप जिला अधिकारी सदर की अनुमति से किया गया था। लोगों का कहना है कि छुटकारा जैसे कार्यक्रम की अनुमति जिला प्रशासन ने कैसे दे दी। जबकि इस तरह के कार्यक्रमों में पहले भी विवाद हो चुके हैं। जिला प्रशासन यह भलीभांति जानता है कि चंगई और छुटकारा जैसे कार्यक्रम ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म परिवर्तन के लिए आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों को करने के लिये स्कूलों का सहारा लिया जाता है। ❑

सांस्कृतिक, ऐतिहासिक सीरियल

❑ सुभाष चंद्र सूद

इन दिनों दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर तीन महत्वपूर्ण, संस्कारक्षम, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक सीरियल दिखाए जा रहे हैं जिनसे हमें अपने गौरवमय उज्ज्वल इतिहास के उत्थान-पतन की झलक मिलती है।

सर्वप्रथम 'कलर चैनल' पर सुप्रसिद्ध मराठी साहित्यकार हरिनारायण आप्टे के ऐतिहासिक उपन्यास 'उषाकाल' पर आधारित 'वीर शिवाजी' का ऐतिहासिक कथाक्रम है। बाल शिवाजी ने किन विकट परिस्थितियों में माता जीजाबाई एवं पिता शाहजी भौसले का आशीर्वाद एवं वरदहस्त लेकर सामान्य जनता में से अपने बाल साथियों (गरीब मावलों) के साथ घुल मिलकर बीजापुर के तत्कालीन क्रूर सुल्तान आदिलशाह का सामना कर हिन्दवी राज्य की स्थापना की। शिवाजी का साहसिक, वीरतापूर्ण, कठिनाइयों एवं चुनौतियों में संतुलित धैर्ययुक्त नेतृत्व, माता जीजाबाई का संयमित प्रेरणादाई मातृत्व, शिवाजी के साथियों का उनके प्रति निश्छल स्नेहपूर्ण सम्पूर्ण समर्पण, हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना के प्रति उनकी अटूट कर्म निष्ठाएं एवं लग्न, इन सभी दृश्यों से मन मस्तिष्क को छूने वाला यह मर्मस्पर्शी सुरूचिपूर्ण प्रेरणादायी सीरियल है।

दूसरा सीरियल इमेजिन चैनल पर 'चन्द्रगुप्त मौर्य' है जिसका स्वर्गीय रामानंद सागर के सुयोग्य सुपुत्रों ने कुशल निर्देशन किया है। चाणक्य-चन्द्रगुप्त की गुरु-शिष्य की अमर जोड़ी हमारे इतिहास के उस काल खण्ड पर प्रकाश डालती है जब यूनानी सम्राट सिकंदर ने विश्व विजय की आकांक्षा लिये उत्तर दिशा से भारत पर गांधार (कंधार) तक्षशिला के रास्ते आक्रमण किया था। पूर्व में विशाल मगध राज्य में नंदवंश के विलासी एवं क्रूर राजा धनानंद के वैभव पूर्ण विलासिता से त्रस्त साधारण जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। तक्षशिला का शासक आंभी देशद्रोह कर विदेशी सिकंदर से मिलकर पुरु सम्राट पौरस पर आक्रमण कर चुका था। सर्वत्र भय एवं निराशा का वातावरण व्याप्त था। आचार्य चाणक्य ने अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में अखण्ड भारत की कल्पना संजोए, अत्याचारी धनानंद की क्रूरता का सामना करते हुए, विभिन्न राजवंशों को एकत्रित करते हुए सामान्य जनता का मनोबल बढ़ाते हुए, चन्द्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में यूनानी आक्रमणकारियों से भारत को मुक्ति दिलाई एवं अखण्ड भारत की कल्पना साकार की, यही इस सीरियल का कथानक है।

तीसरा महत्वपूर्ण उत्कृष्ट सीरियल 'उपनिषद् गंगा' डीडी वन पर रात 11 मार्च से आरम्भ हुआ है। हमारी प्राचीन वैदिक सांस्कृतिक ज्ञान धरोहर में चार वेदों के पश्चात् उपनिषदों का अमर अक्षय अथाह ईश्वरीय ज्ञान भण्डार है। उपनिषद 108 उपलब्ध हैं जिनमें से 60 का जर्मन भाषा तथा 30 प्रमुख का अंग्रेजी भाषा में भी अनुवाद हो चुका है। आद्य शंकराचार्य ने 12 उपनिषदों की विस्तृत व्याख्या भी लिखी है। ये हैं- कौषीतकि, ऐतरेय, छान्दोग्य, केन, तैत्तिरीय, कठ, ईशावास्य, श्वैताश्वतर, वृहदारण्यक, मुण्डक, माण्डुक्य तथा प्रश्नोपनिषद्। कठोपनिषद् में नचिकेता का प्रसिद्ध 'नचिकेता यम' संवाद है, आरुणि की कथा कौशीतकि का अंग है। अत्रि-गार्गी, मैत्रयी संवाद, उपमन्यु कथा प्रसंग हैं। ऐसे विविध प्रसंगों-कहानियों को उपनिषद् गंगा की विषय वस्तु बनाकर सामान्य जनता को हमारा प्राचीन ज्ञान बोधगम्य हो ऐसा स्तुत्य प्रयास किया गया है।

यह धारावाहिक ब्रह्मलीन स्वामी चिन्मयानंद द्वारा संचालित चिन्मय मिशन के सद्प्रयासों का सुफल है। इसका लेखन निर्देशन चाणक्य सीरियल के प्रसिद्धि प्राप्त डॉ. चन्द्र प्रकाश द्विवेदी ने किया है जिन्होंने स्वयं उपनिषदों का अध्ययन कर उसे ठीक समझा तथा उसके बाद सर्वसाधारण जनता को उपनिषदों का अमर ज्ञान समझाने हेतु निर्देशन का बीड़ा उठाया। ❑

स्वस्थ रहने हेतु सुने संगीत

शरीर को चुस्त-दुरुस्त और स्वस्थ रखने में संगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई शोधों में यह सिद्ध हो चुका है कि संगीत का सीधा असर आपके शरीर और सोच पर पड़ता है। भारतीय और पाश्चात्य संगीत में भी विविधता है जहां भारतीय संगीत आपके मन मस्तिष्क और आत्मा को स्पंदित कर हृदय तंत्री को झंकारित करता है वहां पाश्चात्य संगीत केवल शरीर को ही आंदोलित करता है। भारतीय ऋषि-मुनियों ने विभिन्न ऋतुओं, प्रात: दोपहर, संध्या एवं रात्रि के समयानुसार विभिन्न राग-रागनियों की रचना कर भारतीय संगीत को मानवता उपयोगी बनाकर ईश्वर से भी मिलने का ईश्वरीय माध्यम बनाया है। हमारा अधिकांश धार्मिक, आध्यात्मिक ज्ञान गीत-संगीत के माध्यम से ही प्रकट हुआ है। भगवान् कृष्ण द्वारा गायी गई 'गीता' काव्यात्मक रूप में ही प्रकट हुई है। श्री गुरुग्रंथ में सभी शब्द, भजन विभिन्न रागों में ही संजोए गए हैं। गुरुदेव रवींद्र ठाकुर की गीतांजलि भी काव्य रूप में ही है।

भारतीय संगीत मन मस्तिष्क और आत्मा को स्पंदित कर हृदय तंत्री को झंकारित करता है वहां पाश्चात्य संगीत केवल शरीर को ही आंदोलित करता है।

संगीत न केवल तनाव दूर कर मन प्रफुल्लित करता है बल्कि मानसिक शांति भी प्रदान करता है। इसका प्रयोग कई रोगों के ईलाज में भी किया जा रहा है। जानिये संगीत के अन्य लाभ :-

- संगीत सुनने से आपका मूड बदलता है, आपकी सोच सकारात्मक होती है।
- वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि संगीत सुनने से तनाव, अनिद्रा और डिप्रेशन (अवसाद) की समस्या भी दूर होती है।
- संगीत सुनने से मांसपेशियों को आराम मिलता है जिससे चिंता, गुस्सा जैसे नकारात्मक पहल दूर होते हैं।
- ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में संगीत मददगार होता है।
- इससे व्यक्ति को मानसिक ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है
- संगीत सुनने से हमारा प्रति रक्षा तंत्र (जीवनी शक्ति) भी सशक्त होता है।
- मानसिक रोगियों के ईलाज में संगीत का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- संगीत की धुनों में बदलाव के साथ ही श्वसन और हृदय गति के दर में बदलाव आता है। योगासन के साथ मध्यम संगीत का समन्वय अद्‌भुत यौगिक परिणाम लाता है।

संगीत याद्‌दाश्त को बढ़ाता है। रात में धीमी गति का संगीत सुनने से नींद अच्छी गाढ़ी आती है तो जब भी आपका मन मस्तिष्क भारी, अवसाद ग्रस्त हो तो स्वस्थ प्रसन्न रहने हेतु गुनगुनाईए, अगर धार्मिक आध्यात्मिक रुचि हो तो विभिन्न गायकों के भजन सुने, अगर शास्त्रीय गायन की रूचि हो तो शास्त्रीय संगीत सुने। पुराना-नया धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक फिल्मी संगीत भी शरीर-मन में अद्‌भुत मानसिक परिवर्तन एवं प्रसन्नता लाता है। ❑

श्रीमद् भगवद् गीता का पोलिश भाषा में अनुवाद

कर्म की प्रेरणा देने वाले पवित्र धार्मिक ग्रंथ 'भगवद्‌गीता' के रूसी भाषा में अनुवाद पर से प्रतिबंध हटाने के लिये हिन्दुओं एवं इस्कॉन भक्तों को जहां एक लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ी, वहीं ईसाई केथोलिक बहुल पोलैंड में इस पवित्र धर्मग्रन्थ का पहली बार पोलिश भाषा में अनुवाद किया गया है।

यह अनुवाद पोलैंड की अन्ना रकिंसका नामक महिला ने किया है जिन्होंने संस्कृत भाषा में पीएचडी की है तथा संस्कृत का पूर्ण भाषा ज्ञान प्राप्त करने हेतु 10 वर्ष वाराणसी में बिताए हैं। 60 वर्षीय रकिंसका ने दो वर्ष पहले वारसा विश्वविद्यालय से ओरिएंटल इंस्टीट्यूट से पी.एचडी की थी। गीता का पोलिश भाषा में अनुवाद यद्यपि पहले से अंग्रेजी भाषा से था परन्तु उन्होंने इसे सीधे संस्कृत भाषा से किया है। चार बच्चों की मां रकिसका ने अपने पति के प्रोत्साहन पर संस्कृत भाषा में रूचि आरम्भ की। उनके घर में सभी बच्चे धारा प्रवाह संस्कृत बोलते हैं। उनके सबसे छोटे बेटे का नाम योगानंद है तथा वह भी वाराणसी में रहते हैं। कई वर्ष तक मां-बेटे ने साथ-साथ संस्कृत का अध्ययन किया है। ❑

मातृभाषा में पढ़ा इसलिये बना बड़ा वैज्ञानिक

श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी से जब एक दिवस पूछा गया कि आप इतने महान वैज्ञानिक बन गए, इतनी उन्नति आपने कर ली, आप इसमें सबसे बड़ा योगदान किसका मानते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया था कि 'मेरी पढ़ाई मातृभाषा में हुई है इसलिये मैं इतना बड़ा वैज्ञानिक बन सका हूं', आपको ज्ञात होगा कलाम जी की 12वीं तक की पढ़ाई तमिल में हुई है। उसके उपरांत उन्होंने थोड़ी बहुत अंग्रेजी सीख स्वयं को उसमें भी दक्ष बना लिया किन्तु उनकी पढ़ाई की मूल भाषा तमिल रही। कलाम जी के अतिरिक्त इस परियोजना में जितने और भी वैज्ञानिक हैं उन सभी की पढ़ाई मूल भाषा मलयालम, तमिल, तेलगु, कन्नड़, बांग्ला, हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि में हुई। अर्थात् हमारी मातृभाषा में जो वैज्ञानिक पढ़कर निकले उन्होंने स्वदेशी तकनीकी का विकास किया एवं देश को सम्मान दिलाया है। परमाणु अस्त्र निर्माण एवं परीक्षण भी श्री होमी भाभा द्वारा स्वदेशी तकनीकी विकास के स्वप्न, उसको पूर्ण करने हेतु परिश्रम की ही देन है। अब तो हमने परमाणु अस्त्र निर्माण एवं परीक्षण के अतिरिक्त उसे प्रक्षेपास्त्रों पर लगाकर अंतरिक्ष तक भेजने में एवं आवश्यकता पड़ने पर उनके अंतरिक्ष में उपयोग की सिद्धि भी हमारे स्वदेशी वैज्ञानिकों ने अब प्राप्त कर ली है। यह भी सम्पूर्ण स्वदेशी के आग्रह पर हुआ है। अब तो हमने पानी के नीचे भी परमाणु के उपयोग की सिद्धि प्राप्त कर ली है। सम्पूर्ण स्वदेशी तकनीक से निर्मित अरिहंत नामक परमाणु पनडुब्बी इसका ज्वलंत प्रमाण है। जल में, थल में, अंतरिक्ष में हमने विकास किया। इस सारी विधा का प्रयोग स्वदेशी वैज्ञानिकों ने किया, स्वदेशी तकनीक से किया, स्वदेशी आग्रह के आधार पर किया एवं स्वदेशी का गौरव को सम्पूर्ण विश्व में प्रतिष्ठापित किया। ❑

दृष्टिहीन महिला सरपंच ने बदली गांव की तकदीर

सन् 1995 में गुजरात के आणंद जिले के छोटे से गांव चांगा में काफी विरोधों के बावजूद दृष्टिहीन सुधाबहन सरपंच का चुनाव जीतकर एशिया की पहली एकमात्र ऐसी महिला सरपंच बन गई, जो देख नहीं सकती। लेकिन आंखों से दुनिया को कभी न देख पाने वाली सुधाबहन ने मन की नजरों से ही दुनिया देख ली। सरपंच बनने के बाद सुधाबहन की दीर्घदृष्टि भरे कॅरियर की असली शुरुआत हुई और आज उन्होंने पूरे गांव का नक्शा ही बदल कर रख दिया है। जो काम आंखों से देख पाने वाले भी नहीं कर पाते वही सुधाबहन ने कर दिखाए। इसके अलावा वे विकलांगों के लिये शिक्षण और उनके पुनर्निवास के काम में भी पूरी तरह सक्रिय हैं। विकलांगों के हितार्थ सुधाबहन संकलित शिक्षण योजना और जलाराम सेवा ट्रस्ट से भी जुड़ी हुई हैं। वर्तमान में यहां विकलांगों को 53 शिक्षकों द्वारा कक्षा 1 से 12वीं तक शिक्षा प्रदान की जा रही है। ❑

हिन्दी विद्यालयों के बच्चे ज्यादा ईमानदार

अंग्रेजी स्कूलों के बच्चे ईमानदारी में हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों से कच्चे साबित हुए। वे कैरियर के लिये कुछ समझौते करने को बुरा नहीं मानते। अंग्रेजी स्कूल की बीस फीसदी छात्राएं मानती हैं कि धनवान होना ईमानदार होने से अधिक महत्वपूर्ण है जबकि हिन्दी की सिर्फ आठ फीसदी छात्राओं ने यह स्वीकार किया। भ्रष्टाचार के प्रति बच्चों का रुझान जानने के लिये कराए गए सर्वे में यह चीजें निकलकर सामने आई। ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल इंडिया नई दिल्ली द्वारा यह सर्वे भारत के प्रमुख शहरों में कराया गया। जवाब देखे जाएं तो कुछ अलग परिदृश्य उभरता है, अंग्रेजी स्कूल के बच्चे उपहार के लेनदेन को बुरा नहीं मानते। स्कूल के चुनाव में खड़े सहपाठी से उपहार लेने में अंग्रेजी माध्यम की 48 फीसदी छात्राओं को कोई बुराई नजर नहीं आती। हिन्दी का सिर्फ 24 फीसदी छात्राएं यह अनुमति देती हैं। हिन्दी की छात्राएं यह भी नहीं चाहती कि उनके सहपाठी नकल करें। अंग्रेजी की छात्राओं को अच्छे नम्बर लाने के लिये शिक्षक को उपहार देना पसंद है। हिन्दी मीडियम के 74 फीसदी बच्चे अपने सहपाठी को नकल करते देखेंगे तो टीचर को जरूर बता देंगे। अंग्रेजी की 44 फीसदी छात्राएं तटस्थ रहेंगी। हिन्दी के छात्र मानते हैं कि धनवान होने से ईमानदार होना महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी की छात्राओं का रुझान धन और ईमान के बीच बंटा नजर आया। भ्रष्टाचार से लड़ाई में सबसे ज्यादा रुझान हिन्दी की छात्राओं का दिखा, अंग्रेजी की सिर्फ 20 फीसदी छात्राएं भ्रष्टाचार से लड़ना चाहती हैं। ❑

नए मगध का सड़क निर्माता

❑ अमिताभ श्रीवास्तव

बिहार पथ निर्माण विभाग के सचिव प्रत्यय अमृत जानते थे कि यह पीपीपी परियोजना न सिर्फ बिहार में नए निवेशक लेकर आने वाली थी, बल्कि इससे राज्य की छवि में भी चार चांद लगते। 1991 बैच के आईएएस अधिकारी अमृत ने अपनी दलीलें रखीं और आश्चर्यजनक तरीके से दोनों कम्पनियों को इस बात के लिये राजी कर लिया कि वे एक-दूसरे के बोली लगाने में कोई अड़ंगा नहीं डालेंगी।

नतीजे बिहारी के लिये ऐतिहासिक थे, प्रतिस्पर्धा में कामयाब कम्पनी ने शून्य वायबिलिटी गैप फंडिंग पर परियोजना क्रियान्वित करने को सहमति दे दी जबकि सरकार परियोजना लागत का 20 फीसदी इस मद में देने को तैयार थी। बिहार के पथ निर्माण विभाग के सचिव प्रत्यय अमृत राज्य में विकास की नई इबारत लिखने में निभा रहे हैं अहम भूमिका ।बिहार पथ निर्माण विभाग के सचिव प्रत्यय ने हमेशा उम्मीदों से ज्यादा नतीजे दिये हैं। झारखंड के दुमका में प्रोबेशन पर रहे 44 वर्षीय अमृत ने स्थानीय लोगों से रिश्ता बनाने के लिये उनकी संथाली भाषा सीखी। सिमडेगा का एसडीएम रहते हुए वे सुदूर गांवों में साइकिल चलाकर जाते और जुए के अड्डों का खात्मा करते। प्रत्यय डेडलाइन के पक्के हैं। कई साल पहले दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास से एमए करते हुए उन्होंने सबसे अधिक अंक हासिल किये थे,

'काल करे सो आज कर' को मंत्र मानने वाले अमृत ने बिहार को कई उपलब्धियां दिलाई हैं। राज्य सड़क निर्माण विभाग ने 2006-07 से लेकर अब तक बिहार में 13,322.89 किलोमीटर लम्बी सड़कें बनवाई हैं और इनमें से अधिकांश काम 2009 में विभाग में प्रत्यय के आने के बाद हुआ है।

बिहार राज्य पुल निर्माण निगम (बीआरपीएनएन) के लिये प्रत्यय का आना किस्मत का पलटना था। जिस समय निगम अपने सबसे बुरे आर्थिक संकट से गुजर रहा था, प्रत्यय ने कामयाबी की मिसाल कायम की– यह विभाग पिछले 30 साल में जितने पुल नहीं बना सका था, उससे कहीं ज्यादा उन्होंने अपने साढ़े तीन साल के कार्यकाल में बनवा डाले। प्रत्यय ने नए विचारों से समाधान खोजे, प्रोत्साहन ने कार्रवाई की प्रेरणा दी और चुनौती अवसर में तब्दील हो गई।

बिहार राज्य पुल निर्माण निगम के लिये प्रत्यय का आना किस्मत का पलटना था। जिस समय निगम अपने सबसे बुरे आर्थिक संकट से गुजर रहा था, प्रत्यय ने कामयाबी की मिसाल कायम की– यह विभाग पिछले 30 साल में जितने पुल नहीं बना सका था, उससे कहीं ज्यादा उन्होंने अपने साढ़े तीन साल के कार्यकाल में बनवा डाले।

प्रत्यय नवम्बर, 2001 से अप्रैल 2006 तक केन्द्र में डेपुटेशन पर रहे थे। उन्हें गृह राज्य लौटने पर बीआरपीएनएन का पहला आईएएस प्रमुख बनाया गया। यह निगम 11 जून, 1975 को बनाया गया था जो धीरे-धीरे बीमार होकर बिकने की स्थिति में पहुंच चुका था। नीतिश ने 2006 में अपने मुख्यमंत्री बनने के पहले वर्ष में निगम को बचाने की योजना बनाई। उन्होंने एक महत्वाकांक्षी योजना मुख्यमंत्री सेतु निर्माण योजना तैयार की और निगम को 1,150 करोड़ रुपये के पुल के ठेके निबटाने का काम दिया। प्रत्यय ने सालों से रुकी हुई पुरानी परियोजनाओं को पूरा करवाया। उन ठेकेदारों से बात की जो बिहार में काम नहीं करना चाहते थे। उन्होंने अपने इंजीनियरों से भी बात की जो डेडलाइन का अर्थ नहीं समझते थे।

हतोत्साहित इंजीनियरों को प्रोत्साहित करने के लिये पेशेवर वक्ताओं को लाया गया जबकि अच्छा प्रदर्शन करने वालों को विदेशी दौरों पर भेजा गया और खूब सारी प्रशासनिक आजादी दे दी गई। कुल मिलाकर प्रत्यय ने अपने इंजीनियरों में नई जान फूंकी और बदले में इंजीनियर भी कमर कस कर तैयार हो गए। अपनी स्थापना के पहले 30 साल में 314 पुल बनाने वाले इस निगम ने सिर्फ तीन साल में 336 पुल बना डाले।

प्रत्यय अपनी कामयाबी का सेहरा नीतिश के सिर बांधते हैं और कहते हैं, 'सरकार ने मुझे टेन्योर सिक्योरिटी दी। मैं बिहार राज्य पुल निर्माण निगम में साढ़े तीन साल रहा जिस कारण कुछ काम करवा सका।' नीतिश सरकार ने निगम के अच्छे काम के बदले परियोजना लागत के 13.5 फीसदी को मुनाफे के रूप में तय कर दिया जिससे निगम की वित्तीय सेहत सुधरी है। 2008-09 और 2009-10 में निगम ने मुख्यमंत्री राहत कोष में हर साल 20 करोड़ रुपये दान दिये। प्रत्यय को सबसे बड़ी उपलब्धि पिछले साल हासिल हुई जब भारत सरकार से लोक प्रशासन का उत्कृष्टता पुरस्कार उन्हें मिला। 2011 में वैयक्ति श्रेणी में प्रधानमंत्री से पुरस्कार पाने वाले प्रत्यय देश के इकलौते आईएएस अधिकारी हैं। ❑ (साभार : इंडिया टुडे)

गीतिका

उनको घर बुलाने की जरूरत क्या थी?
अश्रु दृग से बहाने की जरूरत क्या थी?
अपना जब कोई नहीं जानने में
उनको दर्पण दिखाने की जरूरत क्या थी?
हर डाल पे बैठे हैं मनचले कौवे
रूप इतना सजाने की जरूरत क्या थी?
जिनमें न शिष्टता है और न सभ्यता
मंच पर बुलाने की जरूरत क्या थी?
अपने भीतर के दिये जलाने थे उन्हें
दीप बाहर जलाने की जरूरत क्या थी?
मूल्यों की जो उड़ाते धज्जियां हैं
अपनी संस्कृति बताने की जरूरत क्या थी?
काट देते हैं पतंगें काटने वाले
पेच उनसे लड़ाने की जरूरत क्या थी?
सर्पों का स्वभाव ही डसना होता है
दूध उनको पिलाने की जरूरत क्या थी?

–**रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र'**, बैजलपुर, अहमदाबाद

हिन्दोस्तान

हिन्दोस्तां है देश अपना,
हिन्दोस्तानी है भेष अपना।
इस भूमि का रिश्ता है वीरों से
यह भूमि मिलती तकदीरों से।
मेरे देश की धरती चंदन है
यहां धर्मों का नहीं बंधन है
यहां हैं धर्म अनेक,
उद्देश्य है पर सबका एक।
यहां जन्मे हैं वीर महान।
जिनसे बढ़ता देश का सम्मान
यह धरती है भगवानों की।
शूर-वीर, योद्धा, बलवानों की
प्राकृतिक सौंदर्य भरपूर यहां
यह है अपना हिन्दोस्तां। ❑

मैं भारत की नारी हूं

पथ को प्रदर्शित करने वाली
जीवन दर्शन सिखाने वाली
प्रेयसी ही नहीं और भी बहुत कुछ
कर्म क्षेत्र पर अर्पित होने वाली
मैं भारत की नारी हूं।

जग के आइने में देखो
कौन-सा पथ, कौन सी मंजिल?
जो नहीं की हमने हासिल
विजय परचम लहराने वाली,
मैं भारत की नारी हूं।

मेरा हर रूप अद्वितीय
मां, बेटी, बहन या अर्धांगनी
हर रिश्तों को निभानेवाली
श्रेष्ठ भी हूं, सदाचारी हूं
मैं भारत की नारी हूं।

हां मैंने अर्पण सीखा है
मैंने समर्पण सीखा है
अर्पित करती हूं, जो समाहित है
स्वार्थी नहीं, परोपकारी हूं
मैं भारत की नारी हूं।

संस्कृति संस्कारों के पोषक तत्व से
सरल हूं, सहनशील हूं
हर रूप में लगनशील हूं
फतेह होगी मेरी अधिकारी हूं
मैं भारत की नारी हूं।

नहीं टूटते परिवार यहां
अपनी जिद मनवाने को
नहीं बिखरते एतबार यहां
ठोस मजबूत आधार हूं
मैं भारत की नारी हूं।

हार में हौसला, जीत में जश्न
हर वक्त बेहतर संतुलन लिये
जीवन के सामंजस्य के लिये
रिश्तों पर मैं वारी हूं
मैं भारत की नारी हूं।

– **सविता मेहता**, चड़गांव, शिमला

मैंने हिन्दू धर्म कैसे और क्यों अपनाया

भगिनी निवेदिता

भगिनी निवेदिता जो जन्मत: मार्गरेट नोबल थीं, स्वामी विवेकानंद से प्रेरित होकर भारत आई थीं। उन्होंने स्वयं को स्त्री-शिक्षा और हिन्दू धर्म के प्रति समर्पित कर दिया। 12 अक्तूबर, 1902 को बम्बई में 'हिन्दू महिला सोशल क्लब' को सम्बोधित करने के लिये आयोजकों ने उनसे 'भारतीय नारीत्व की विशेषताएं' विषय पर बोलने के लिये अनुरोध किया था। भाषण से पहले भगिनी निवेदिता श्रोताओं से मिलीं और उन्होंने अपने भाषण का विषय बदलने का निर्णय लिया। उनके अपने शब्दों में, 'इतनी बड़ी संख्या में हिन्दू महिलाओं को देखकर मुझे उस विषय पर बोलना अपनी धृष्टता महसूस हुई, क्योंकि भारतीय नारीत्व की आपमें से प्रत्येक में मुझसे बेहतर समझ है और उस पर आचरण कर सकती हैं।' इसके बजाए उनसे अनुरोध किया गया कि उन्हें अपना धर्म परिवर्तित करने की प्रेरणा कैसे मिली, उस विषय पर बोलें। यह भाषण उनके हिन्दू धर्म ग्रहण करने का अपना विवरण है।

सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम धर्मों के जन्म-स्थान के रूप में मैं भारत से प्यार करती हूं; ऐसे देश के रूप में, जहां विशालतम पर्वत हिमालय स्थित है; ऐसे स्थान के रूप में जहां सबसे उदात्त पर्वत स्थित हैं। ऐसा देश, जहां सादगीपूर्ण घर हैं; जहां घरेलू सुख-शांति सबसे अधिक उपस्थित है; जहां स्त्री निस्वार्थ भाव से, विनम्रता से, बिना हिचकिचाहट के भोर से लेकर रात तक अपने प्रियजनों की सेवा करती है; जहां मां और दादी अपने बच्चों की सुख-सुविधा का ध्यान रखती हैं, पूर्वानुमान करती हैं और उसमें अपना योगदान देती हैं।

मैं जन्म और पालन-पोषण से एक अंग्रेज स्त्री हूं और अठारह वर्ष की आयु तक मेरा शिक्षण-प्रशिक्षण वैसे ही हुआ, जैसा अंग्रेज लड़कियों का होता है। बचपन से ही ईसाई धार्मिक सिद्धांत मेरे मन में डाल दिये गए थे और मैं भक्तिभाव से बाल यीशु की आराधना करती थी तथा उनके आत्म-बलिदान के लिये मैं उन्हें हृदय से प्रेम करती थी। परन्तु अठारह वर्ष की आयु के बाद ईसाई सिद्धांतों की सत्यता के प्रति मेरे मन में शंकाएं उठने लगीं। उनमें से कई मुझे झूठे और सत्य से असंगत लगने लगे। ये शंकाएं उत्तरोत्तर और बलवती होती गई तथा इसके साथ ही ईसाइयत में मेरा विश्वास और डांवांडोल होने लगा। सात वर्ष तक मैं उसी ऊहापोह की स्थिति में रही; अत्यंत दु:खी, फिर भी सत्य को जानने के लिये अत्यधिक उत्सुक। मैं चर्च जाने से कतराने लगी, फिर भी अपनी आंतरिक शांति की लालसा में कभी-कभी दौड़कर चर्च में प्रवेश करती और स्वयं को अनुष्ठानों में डुबो देती, जैसा मैं तब तक करती आई थी और मेरे आसपास के सभी लोग करते थे। परन्तु हाय! मेरी संतप्त आत्मा, जो केवल सत्य को जानने के लिये बेचैन थी।

सात वर्षों की उस संशयग्रस्त मन:स्थिति में मेरे मन में विचार आया कि जिस सत्य की मुझे तलाश है, उसका पता मुझे प्रकृति-विज्ञान के अध्ययन से चल सकता है। इसलिये, संसार और उसमें समाई सभी चीजों की उत्पत्ति के बारे में मैंने मनोयोग से पढ़ना शुरू कर दिया और पाया कि प्रकृति के नियमों में कम से कम एक अविरोध है। उन्हीं दिनों मेरे हाथ में बुद्ध की जीवनी आ गई और मैंने जाना कि यहां भी एक बाल ऋषि थे, जो बाल यीशु से कई शताब्दियों पहले हुए थे और जिनके बलिदान भी कुछ कम आत्मविमुख नहीं थे। इस प्रिय बालक गौतम ने मेरे मन पर अधिकार कर लिया और अगले तीन वर्ष मैंने बौद्ध धर्म के अध्ययन में लगा दिये– और मैं उत्तरोत्तर इस बात की कायल होती गई कि मुक्ति का जो मार्ग उन्होंने बताया, वह ईसाई धर्म के उपदेशों की तुलना में सत्य के अधिक निकट था।

और अब मेरे विश्वास के लिये एक निर्णायक मोड़ आया। वायसराय लॉर्ड रिपन के एक चचेरे भाई ने मुझे चाय पर आमंत्रित करते हुए वहां मुझे भारत के एक महान् स्वामी से मिलने के लिये कहा, जो शायद मेरी आत्मा की खोज में सहायता कर सकें। जिन स्वामी से मैं यहां मिली, वे और कोई नहीं, स्वामी विवेकानंद थे, जो बाद में मेरे गुरु बने और जिनकी शिक्षाओं ने मेरे लम्बे समय से संशयग्रस्त मन को शांति प्रदान की। फिर भी, एक या दो मुलाकातों में मेरे संशय दूर नहीं हुए। ओह, नहीं...! उनके साथ मेरी कई आत्मीय चर्चाएं हुई और मैंने उनकी शिक्षाओं पर एक वर्ष तक विचार किया। **(शेष पृष्ठ 31 पर)**

डायबिटीज के घरेलू उपचार

मेथी : दो चम्मच मेथी के बीजों को पानी में रात भर भिगो दें। सुबह उठते ही इस पानी को छान कर पी लें। कुछ लोग इसके बीजों को साबुत निगलना पसंद करते हैं तो कुछ बीजों के पाउडर को दूध के साथ लेते हैं।

कड़ी पत्ता : माना जाता है कि प्रात: काल 8 से 10 बजे के बीच कड़ी पत्ते का सेवन वंशानुगत कारणों से होने वाली डयबिटीज को दूर रखता है तथा डायबिटिक रोगियों के शरीर में शुगर के स्तर को नियंत्रित करता है।

आंवला : डायबिटीज के लिये यह एक पारम्परिक दवाई मानी जाती है। एक चम्मच आंवला के रस को एक कप ताजे करेले के रस में मिलाकर 60 से 70 दिन पिएं। यह डायबिटीज के कारण आंखों की समस्या को भी दूर करता है।

तरवर : इसके पाउडर में थोड़ा-सा शहद मिला कर सेवन करने से डायबिटीज के विकास पर रोक लगती है। कुछ लोग इसकी कलियों का काढ़ा तैयार करके पीते हैं।

चकोतरा : प्रतिदिन चकोतरा का सेवन कुछ ही सप्ताह में डायबिटीज को नियंत्रित करता है।

जामुन : जामुन के सूखे बीजों का पाउडर दिन में तीन बार तीन-तीन ग्राम खाने से लाभ होता है।

आम : आम की पत्तियों को पानी में रात भर भिगो दें। सुबह पत्तियों को निचोड़ें और इस पानी को छान कर पीने से डायबिटीज के शुरुआत में काफी लाभ होता है।

करेला : प्रात:काल करेले का रस खाली पेट पिएं। चाहें तो करेले के टुकड़े करके काढ़ा भी तैयार करके पी सकते हैं।

प्याज और लहसुन : इन दोनों में मौजूद एलिसिन और डियालिल डाईसल्फाइड कैमिकल्स शरीर में शुगर की मात्रा को कम करते हैं। ये दोनों कार्डियोवैस्कुलर लाभ भी देते हैं।

दालचीनी : टाईप 2 डायबिटीज में दालचीनी काफी लाभदायक है। 40 दिनों तक नाश्ते से पूर्व आधा चम्मच दालचीनी का सेवन करने से डयबिटीज नियंत्रित रहती है।

एलोवेरा : टाइप 2 डायबिटीज के रोगियों को एलोवेरा का रस पीने से लाभ होता है। इसमें मौजूद मैनोनोज और ग्लूकोमानोन डायबिटीज रोगियों को विशेष लाभ प्रदान करते हैं।

नीम : नीम ब्लड ग्लूकोज के स्तर को परिवर्तित किये बिना ही इंसुलिन की जरूरत को कम कर सकता है। नियमित रूप से नीम का काढ़ा पीने या नीम की गोलियां खाने से डायबिटीज रोगियों को विशेष लाभ होता है। ❑

भोजन द्वारा स्वास्थ्य

जिस प्रकार बिना डीजल या पैट्रोल के वाहन नहीं चलाए जा सकते, उसी प्रकार बिना भोजन के शरीर रूपी जहाज को नहीं चलाया जा सकता। भोजन शरीर का ईंधन है। अगर यह शरीर को नहीं मिलेगा तो शरीर अनेक रोगों से ग्रस्त हो जाएगा। अत: हम आपको भोजन द्वारा स्वास्थ्य बनाने के कुछ नियम दे रहे हैं जिन्हें अपनाकर आप अपना स्वास्थ्य बना सकते हैं–

- भोजन हमेशा पालथी मार कर करें, खड़े होकर नहीं।
- भोजन हमेशा शांत वातावरण में करें।
- भोजन करते समय बातें न करें।
- भोजन हमेशा खुली हवा में करना चाहिये।
- भोजन करने से पहले हाथों को अच्छी तरह धोना चाहिये।
- भोजन अच्छी तरह से चबाएं।
- भोजन करते समय इष्ट देवता को नमस्कार करें क्योंकि उन्हीं की बदौलत हमें भोजन प्राप्त होता है।
- भोजन खाते समय बीच में आवश्यकतानुसार पानी पिया जा सकता है लेकिन खाना खाने के बाद पानी न पियें। आधे घंटे बाद पानी पिया जा सकता है।
- बासी भोजन नहीं करना चाहिये।
- भोजन ताजा होना चाहिये।
- भूख लगने पर ही भोजन करना चाहिये। इसका पालन न करने पर पाचनतंत्र बिगड़ जाता है। ❑

HARD & SOFTWARE INC. With best compliments from TM TRADING COMPANY
Shastri Nagar Kullu (H.P.) 175101 Ph: 01902-226532 Mob.:94180-18227, 94184-30013, 94184-86096
Website : www.hardnsoftware.in
Deals in : Computer, Laptop, Accessories, Computer Stationry, Printer, Cartridges, UPS, Invertors, Software Development, Antivirus, Website Designing, Books, Data Recovery, CCTV/IP Cameras, AMC

खुंब में है औषधीय गुण

खुंब स्वास्थ्य एवं सौंदर्य की दृष्टि से अतिलाभदायक है। वनस्पति जगत के निम्न समुदाय से सम्बंधित इस गुच्छ विशेष फफूंद की संरचना धागानुमा होती है, जो कि अपना पोषक भोज्य पदार्थ संग्रह करके खुंब के रूप में परिवर्तित हो जाती है। खुंब एक परिपक्व कवक है, जो कि वनस्पति श्रेणी में आता है। खुंब में स्टार्च बिल्कुल भी नहीं होता, बल्कि अन्य खाद्य पदार्थों के सेवन से एकत्रित हुआ स्टार्च संग्रह भी इससे नष्ट होता है।

- खुंब में स्टार्च न होने के कारण यह मधुमेह व रक्तचाप के रोगियों के लिये विशेष लाभदायक है।
- खुंब के उपयोग से गठिया, जोड़ों का दर्द, शरीर की सूजन आदि से बचाव होता है।
- खुंब में पाए जाने वाले प्यूरीन या पाइरिमिडीन, क्यूनोन्स लेन्टीनन आदि पदार्थ हानिकारक जीवाणु रोधी क्षमता रखते हैं।
- वसा की मात्रा नगण्य होने तथा कॉलेस्ट्रोल रोधी तत्वों की उपस्थिति की वजह से खुंब उच्चरक्तचाप व मोटापे से पीड़ित लोगों का आदर्श भोजन है। क्षारीय प्रोटीन, अम्लीय प्रोटीन, कालवसिन क्यूनोइड व लेंटीनन इत्यादि पदार्थों की उपस्थिति के फलस्वरूप शरीर में ट्यूमर बनने से रोकता है।
- खुंब खाने वालों को झुर्रियां नहीं पड़ती और यदि पड़ गई हो तो लगातार खुंब के सेवन से धीरे-धीरे कम हो जाती हैं।
- खुंब के उपयोग से त्वचा में चमक व रंगत में काफी निखार आता है।
- खुंब के उपयोग से आंखों के नीचे काले घेरे नहीं पड़ते व चेहरे की सुन्दरता बनी रहती है।
- खुंब के नियमित सेवन से होंठों पर लालिमा बनी रहती है।

अन्य फलों एवं सब्जियों की तरह खुंब से भी भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जा सकते हैं। ❑

आलू में नालंदा ने सबको पछाड़ा

बिहार के नालंदा जिले के दरवेशपुर गांव के नीतिश कुमार और सुमन्त कुमार भी कुछ कम नहीं हैं। दोनों किसानों ने आलू की पैदावार में देश का नाम ऊंचा किया है। उन्होंने नीदरलैंड के किसानों को पीछे छोड़ते हुए प्रति हेक्टेयर 729 क्विंटल आलू का उत्पादन किया है। इससे पहले वह धान उत्पादन में चीन को पीछे छोड़ चुके हैं। तब उन्होंने 190 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के मुकाबले 224 क्विंटल प्रति हेक्टेयर धान का उत्पादन किया था। दरवेशपुरा की मिट्टी दोमट बलुई है। आलू उतपादन के लिये यह अच्छी मानी जाती है। खेती की तैयारी में सामान्य तौर तरीके अपनाए गए। तीन-चार बार जुताई कर मिट्टी को और भुरभुरा बनाया गया। ❑

हिमाचल में भी सफल है आंवले की खेती

हिमाचल प्रदेश में आंवला की खेती 1000 मीटर तक की ऊंचाई तक सफलतापूर्वक की जा सकती है।

आंवले का पौधा कोहरा रोधक होता है। इसके पौधे गुठली व कलम द्वारा तैयार किये जाते हैं। आंवले की मुख्य किस्में हैं– बनारसी, चकिया, एनपी-7 व एनपी-10. इन सभी किस्मों के फल देसी आंवले से बड़े होते हैं। लेकिन देसी आंवला भी लगाया जा सकता है। परन्तु इससे एक तो फल देरी से मिलते हैं और दूसरे देसी फल छोटे होते हैं। इनकी बाजार में कीमत कम मिलती हैं।

आंवलों के पौधों को 7.5 व 7.5 मीटर की दूरी पर लगाया जाता है। पौधे लगाने से कुछ महीने पहले तीन-तीन मीटर आकार के गढ़े खोदे जाने चाहिये। कुछ सप्ताह खुला रखने के बाद इन गढ़ों को मिट्टी और कम्पोस्ट या गोबर की खाद के मिश्रण से भर दें। आंवले के पौधे बरसात या बसंत ऋतु में लगाए जा सकते हैं। आंवले के फलों पर कभी-कभी काले धब्बे पड़ जाते हैं, जिससे बाजार में इनका भाव कम मिलता है। इसकी रोकथाम के लिये बेविस्टीन फफूंदनाशक का प्रयोग करना चाहिये। आंवले के पौधे में अप्रैल में फूल तथा सितम्बर में फल लगते हैं।

बाजार में आंवला 15 से 25 रुपये किलो के हिसाब से बिक जाता है। आंवला एक पौष्टिक व महत्वपूर्ण फल है। यह विटामिन सी व औषधीय गुणों से भरपूर है। आंवले की गुठली में तेल पाया जाता है। आंवला शक्तिवर्धक व मूत्रवर्धक है। यह रक्त-स्राव व अतिसार में प्रयोग किया जाता है। खून की कमी व पीलिया रोग में आंवला बहुत उपयोगी है।

आंवले से त्रिफला चूर्ण, मुरब्बा, च्यवनप्राश व आंवला चूर्ण बनाए जाते हैं। आंवले की चटनी स्वादिष्ट व भूख बढ़ाने वाली है। ❑

सनातन जीवन में धन की उपयोगिता

❑ चेतन कौशल नूरपुरी

भारत ऋषि-मुनियों का देश है। भारतीय मनीषियों ने मानव जीवन को 100 वर्ष तक मुख्यत: चार आश्रमों में विभक्त किया था। प्रथम 25 वर्ष ब्रह्मचर्याश्रम में विद्या ग्रहण, 25 से 50 वर्ष गृहस्थाश्रम में सांसारिक कार्य, 50 से 75 वर्ष वानप्रस्थाश्रम में आत्म चिन्तन-मनन करते हुए आत्म साक्षात्कार और 75 से 100 वर्ष तक सन्यासाश्रम में जनकल्याण करने का कार्य किया जाता था। इनके अंतर्गत सनातन समाज को सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक और धार्मिक दृष्टि से विश्व भर में सर्वोन्नत श्रेणी में सम्पन्न ही नहीं गिना जाने लगा था बल्कि विश्व ने उसकी आर्थिक सम्पन्नता देखते हुए उसे सोने की चिड़िया के नाम से भी विभूषित किया था।

'वीर भोग्या वसुंधरा' अर्थात् वीर पुरुष ही धरती का सुख भोगते हैं। वीर वे हैं जो अपने अदम्य साहस के साथ जीवन की हर चुनौती का सामना करते हुए अपने जीवनोद्देश्य को सफलता पूर्वक पूरा करते हैं। इसी आधार पर गृहस्थाश्रम में सांसारिक सुख भोग किया जाता था। शेष तीनों आश्रमवासी गृहस्थाश्रम पर निर्भर रह कर अपने विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अपना-अपना कार्य किया करते थे।

विद्यार्थी गुरुकुल में रह कर विद्या अर्जित करते थे। पराक्रमी राजा वन गमन - एकांत वास करने, वानप्रस्थी बनने से पूर्व, स्वेच्छा से भोग्य वस्तुओं को अपने योग्य उत्तराधिकारी को सौंप देते थे और सन्यासी बहते जल की तरह कभी एक स्थान पर निवास नहीं करते थे। वे भ्रमण करते हुए लोक मार्गदर्शन करते थे। इस प्रकार भोग-सुख की सभी सुख सुविधाएं मात्र गृहस्थाश्रम वासियों की सम्पदा होती थी। यही भारतीय संस्कृति है। इसी कारण भारत में संग्रहित अपार सम्पदा, विदेशियों के लिए आकर्षण बनी और उन्होंने उसे पाने और हथियाने के लिए साम, दाम, दंड और भेद नीतियों का भरपूर प्रयोग किया।

समाज की इस आर्थिक सम्पन्नता और उन्नति के पीछे जिस महान् शक्ति का योगदान रहा है, वह शक्ति थी, योगियों की योगसाधना और कर्मयोग। श्रीकृष्ण जी उसके महान् आदर्श रहे हैं। उन्होंने संसार में रहते हुए भी कभी संसार से प्रेम नहीं किया। उन्होंने स्वयं से पल भर के लिए भी योग को कभी अलग नहीं किया। वे संसार में कभी लिप्त नहीं हुए।

यह तो सत्य है कि प्राचीन काल से ही सनातन समाज भौतिक सुख सुविधाओं के प्रति उदासीन था और उस समय प्रकृति का शोषण नहीं होता था। इसका कारण समाज सादगी पसंद, अध्यात्म प्रिय और प्रकृति-प्रेमी था, जबकि आज समाज प्रकृति के विरुद्ध अनेकों कार्य कर रहा है। इस तरह वह महाप्रलय को आमन्त्रित कर रहा है।

प्रकृति की परिवर्तनशीलता के प्रभाव से सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक और धार्मिक क्षेत्रों में परिवर्तन होना निश्चित था, परिवर्तन हुआ।

यह तो सत्य है कि प्राचीन काल से ही सनातन समाज भौतिक सुख सुविधाओं के प्रति उदासीन था और उस समय प्रकृति का शोषण नहीं होता था। इसका कारण समाज सादगी पसंद, अध्यात्म प्रिय और प्रकृति-प्रेमी था, जबकि आज समाज प्रकृति के विरुद्ध अनेकों कार्य कर रहा है।

आज भारतीय समाज में, उसका मार्गदर्शक, अभिभावक, गुरु, नेता, प्रशासक, सेवक और नौजवान योगसाधना से विमुख हो गया है, जो चिन्ता का विषय है। उन्हें पाश्चात्य देशों की तरह मात्र अच्छा खाना, गाड़ी, बंगला, अपार धन और सुख-सुविधाएं ही चाहिएं, भले ही वह घोटाला करके, चोरी से, रिश्वत-घूस लेकर या फर्जीबाड़े से ही क्यों न जुटाई गई हो। इसमें उनकी धन लोलुपता बढ़ती जा रही है। उन्हें राष्ट्रहित से कुछ भी लेना देना नहीं है। भारत आर्थिक शक्ति बनने के स्थान पर भीतर ही भीतर खोखला होता जा रहा है। आए दिन नए-नए घोटाले हो रहे हैं। लोगों का सफेद धन बे-रोक टोक, तेजी से कालाधन बन कर, विदेशी बैंकों की तिजोरियों में समाए जा रहा है। चोरी करना, रिश्वत लेने-देने का प्रचलन जोरों पर है। भ्रष्टाचार की सदाबहार बेल निर्भय होकर हर तरु को अपनी जकड़ में ले रही है। हमारी इसी अपार धन सम्पदा को पहले विदेशियों ने लूटा था और अब उसे अपने ही लोग अपने दोनों हाथों से दिन-रात लूट रहे हैं। इस तरह न जाने कब थमेगा, लूटने का यह सिलसिला! हम चाहें तो इस लूट को नियंत्रित कर सकते हैं। यह कार्य भारतीय जीवन पद्धति पर आधारित व्यवस्था अपनाने से सम्भव हो सकता है। इस भयावह आर्थिक चुनौती के विरुद्ध, समाज हित में, हम सबकी सकारात्मक एवं रचनात्मक भूमिका होनी चाहिए। ❑

भारतीय शिक्षा पद्धति

❑ देव आर. भारद्वाज

आदिकाल से ही भारत की शिक्षा पद्धति पर्याप्त विकसित थी। प्राचीन काल में गुरुकुल की स्थापना शिक्षा प्रदान करने हेतु की जाती थी। बड़े-बड़े ऋषि मुनि, ज्ञानी जंगलों में या नगर के समीप अपने गुरुकुल की स्थापना करते थे। शिक्षाप्राप्ति हेतु छात्रों को ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक था और गुरुकुल में ही शिक्षापूर्ण होने तक रहना पड़ता था। कोई भी गुरु शिक्षा हेतु धन नहीं लेते थे बल्कि शिक्षा पूर्ण होने पर सामर्थ्य अनुसार गुरु दक्षिणा लेते थे।

हर तरह का ज्ञान-विज्ञान इन्हीं आश्रमों व गुरुकुलों में प्रदान किया जाता था। कभी-कभी विशेषज्ञता हासिल करने हेतु किसी-किसी विशेषज्ञ गुरु के आश्रमों में भी जाना पड़ता था। यही शिक्षा पद्धति रामायण व महाभारत काल से काफी अर्सा बाद तक प्रचलित रही।

अमेरिका के राष्ट्रपति स्कूलों में जा जाकर बच्चों को गणित पढ़ने के लिये प्रेरित करते हैं ताकि उनकी नौकरियां भारतीय या चीनियों को न मिले। और भारतीय नेताओं को देखें कभी स्कूलों का रुख नहीं करते सिर्फ वोट और नोट पर ही केन्द्रित रहते हैं। सिर्फ डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इसके अपवाद हैं क्योंकि वे जहां भी जाते हैं, स्कूली बच्चों से जरूर मिलते हैं।

इसके पश्चात् शिक्षा पद्धति के दूसरे पड़ाव की अगर बात करें तो कुछ स्थान शिक्षा के महान् केंद्र बने जिनमें तक्षशिला, नालंदा, काशी आदि प्रमुख हैं। इस युग में भी शिक्षा का विकास अपने चरम पर था। भारतीय शिक्षा यहां तक, ज्ञान, विज्ञान संस्कार, आदर्श चरित्र निर्माण व शोध पर केन्द्रित थी। परतंत्र भारत में शिक्षा का कोई विकास नहीं हुआ क्योंकि हिन्दी समाज पर तरह-तरह के सामाजिक प्रतिबद्ध लगाए गए। धर्मपरिवर्तन व मुस्लिम धर्म का प्रचार प्रसार मुगलों के शासनकाल के अंतिम वर्षों में काफी हुआ।

मुगलों के बाद जैसे ही अंग्रेजों का शासन भारत में कायम हुआ उन्होंने काफी दूरअंदेशी के साथ काम लेते हुए मैकाले को भारतीय शिक्षा पद्धति बनाने हेतु भारत भेजा। लार्ड मैकाले ने सौ साल के भीतर ही काले अंग्रेजों का एक ऐसा अभिजात्य वर्ग खड़ा किया कि अगले 100 सालों तक उनकी कम्पनियां, उनका देश अभी और भारत को आर्थिक और मानसिक रूप से गुलाम बनाए रख सकता है।

स्वतंत्रता के पश्चात् वही शिक्षा प्रणाली लागू की गई जो अंग्रेजों द्वारा निर्मित थी। धीरे-धीरे पाश्चात्य शिक्षा ही हम पर प्रभावी हो रही है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का अनुसरण करते हुए हमारे देश में स्कूल कॉलेज, विश्वविद्यालयों ने अपने परिसर इतने बढ़िया बनाए हैं जिसमें अत्याधुनिक सुख-सुविधाएं हैं, वातानुकूलित कक्ष, इंटरनेट, कम्प्यूटर और पढ़ाने के लिये कम वेतन वाले शिक्षक उपलब्ध हैं। अत्याधुनिक सुख सुविधाओं से लैस वातानुकूलित परिसर में पढ़ने वाले छात्र भूख की कीमत, मेहनत और लगन जैसे गुणों को कभी भी पा नहीं सकते, या ये कहिये चरित्र संस्कार, आदर्श को अपने दैनिक जीवन में नहीं अपना सकते। ये सारे गुण तब आते हैं जब प्रारम्भिक शिक्षा के दौरान हमारे अध्यापक अध्यापिकाएं ये सब सिर्फ पढ़ाएं ही नहीं बल्कि इनका प्रदर्शन भी अपने जीवन व्यवहार में लाएं। हमारा देश अब शिक्षा में 100 प्रतिशत विदेशी निवेश को आमंत्रित कर चुका है जिसके परिणामस्वरूप पियरसन जैसे अमेरिकन कम्पनियां पैसा कमाने हेतु शिक्षा का चोला ओढ़कर कई विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों तक पहुंच गई हैं।

अब हमारी शिक्षा पर अमेरिकन प्रभाव है क्योंकि अमेरिका में नौकरी हर तीसरे भारतीय का स्वप्न है। अमेरिकी कम्पनी में नौकरी या अमेरिकी कम्पनियां जो अपने लाभ को बढ़ाने के लिये अपना काम कॉल सेंटर के जरिये भारत और दूसरे एशियाई देशों को आउटसोर्स कर रही हैं, के कारण अब हमारी शिक्षा पद्धति भी अमेरिकन स्कूलों जैसे वातानुकूलित स्कूल, वातानुकूलित स्कूल बसें, बढ़िया कैम्पस, इंटरनेट, ब्रॉडबैंड, स्मार्ट कक्षाओं पर आधारित है। भारतीय शिक्षा, भारतीय प्रतिभा व भारतीय मुद्रा का दोहन करने विदेशी शिक्षा का बाजार सामने खड़ा है।

शिक्षा का मतलब है बच्चों में जिज्ञासा की उत्पत्ति। शिक्षा के माध्यम से प्रारम्भ में यही होने चाहिये, मगर हो बिल्कुल उल्टा रहा है। स्मार्ट क्लासिज़ के कंसेप्ट व इसमें उपलब्ध कांटेंट को लागू न किया गया तो हमारी आनेवाली नस्ल सिर्फ यस मैन बनकर रह जाएगी।

बराक ओबामा का एक बयान कुछ दिनों पहले पढ़ा कि वह नहीं चाहते कि नया शोध, नई खोज केवल भारत या चीन में ही हो, अमेरिका के राष्ट्रपति स्कूलों (शेष पृष्ठ 31 पर)

पानी का बाजार खड़ा करने की तैयारी

❑ संजय सिंह

पिछले दिनों फ्रांस में विश्व जल फोरम का आयोजन किया गया, जहां दुनिया भर के लगभग 150 देशों के 20 हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। सम्मेलन में प्रमुख रूप से पेयजल, स्वच्छता, सिंचाई, कम पानी की खेती, खाद्य सुरक्षा, शहरी इलाकों में पेयजल स्वच्छता और स्वच्छता के अधिकार पर व्यापक चर्चा की गई। इस सबके चिंतन केन्द्र में हाशिये पर पड़े कमजोर, सामाजिक रूप से बहिष्कृत समुदाय, महिलाएं और बच्चे रहे। इस सम्मेलन में विश्व में लगातार बढ़ रही गरीबी और विषमताओं का असर सीधे तौर पर दिखाई दिया।

सम्मेलन में व्यापक सहमति बनी कि पानी लाभ के लिये नहीं है। यह एक प्राकृतिक सम्पत्ति है। इस पर सभी का बराबरी का अधिकार है। सम्मेलन में जहां सामाजिक कार्यकर्ता पानी के व्यापार का विरोध कर रहे थे वहीं दूसरी तरफ पानी के कारोबार में अपना मुनाफा खोज रही कम्पनियां पानी के व्यावसायीकरण की वकालत भी कर रही थीं। ये कम्पनियां जल संकट के समाधान के नाम पर बाजार खड़ा करने की योजना बना रही है। आने वाले समय में पानी का कारोबार दुनिया का सबसे मुनाफे का कारोबार साबित होगा। वैसे अभी भी दुनिया में पानी का सालाना कारोबार एक लाख करोड़ रुपये से अधिक का है, जो लगातार बढ़ता ही जा रहा है।

पानी की प्राचीन व्यवस्था में यह सुनिश्चित किया गया था कि सबको बिना किसी भेदभाव के पानी मिल सके। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी पानी को कर से मुक्त रखा गया था। कुछ वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र ने संघ पेयजल और स्वच्छता को मानवीय परिभाषाओं में शामिल किया है। मौलिक अधिकारों के प्रति सरकार की जवाबदेही बनती है, लेकिन मौलिक अधिकारों को निजी क्षेत्र में सौंपने का फायदा उठाकर वैश्विक स्तर पर पानी का कारोबार लगातार बढ़ रहा है।

पानी का कारोबार करने वाली कम्पनियां अपने लाभ व व्यापार के लिए प्राकृतिक संसाधनों जैसे नदियों, झीलों व झरनों को अपने कब्जे में ले रही हैं। भारतीय संदर्भ में देखें तो एक लीटर पानी की एक बोतल पर कम्पनी लगभग 10 रुपये का मुनाफा कमाती है। यानी पानी का कारोबार 70 प्रतिशत लाभ का कारोबार है। एक तरफ तो भारत के योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया का कहना है कि 28 रुपये प्रतिदिन खर्च कर सकने वाला व्यक्ति गरीबी रेखा के ऊपर है दूसरी तरफ पानी की दो बोतलें 30 रुपये में मिल रही हैं। यदि पानी के खर्चे को आदमी की आमदनी से जोड़ा जाएगा तो निश्चित रूप से मोंटेक सिंह को गरीबी की नई परिभाषा तय करनी होगी। पानी के कारोबार के चलते प्राकृतिक संसाधनों के अस्तित्व के ऊपर खतरा मंडराने लगा है। भूगर्भीय जल का अत्यधिक दोहन होने के कारण एक बड़ी आबादी की शुद्ध पेयजल से पहुंच दूर होती जा रही है। पानी के आवश्यक व लाभकारी मिनरल्स नीचे जा रहे हैं और उपलब्ध पानी की गुणवत्ता खराब होती जा रही है।

पानी की प्राचीन व्यवस्था में यह सुनिश्चित किया गया था कि सबको बिना किसी भेदभाव के पानी मिल सके। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी पानी को कर से मुक्त रखा गया था। कुछ वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र ने संघ पेयजल और स्वच्छता को मानवीय परिभाषाओं में शामिल किया है। मौलिक अधिकारों के प्रति सरकार की जवाबदेही बनती है, लेकिन मौलिक अधिकारों को निजी क्षेत्र में सौंपने का फायदा उठाकर वैश्विक स्तर पर पानी का कारोबार लगातार बढ़ रहा है। इसके लिये कुछ सामाजिक संस्थाएं अपना हित और फायदा देखते हुए इन कम्पनियों के साथ खड़ी होती दिखाई दे रही है– भले ही भविष्य में आम आदमी को इन कम्पनियों की मुनाफाखोरी के चलते अपने अधिकारों का नुकसान उठाना पड़े। इसका अंदाजा इस बात से लगता है कि फ्रांस जैसे औद्योगिक देश में व्यापारी पानी से व्यापार की व्यापक संभावनाएं तलाश रहे हैं। सरकारें अपनी जवाबदेही से बचने के लिये पीने के पानी की समस्या का समाधान निजी क्षेत्र को सौंपने के लिये उतावली दिखाई दे रही है।

भारतीय लोक परम्परा में पानी पिलाने का काम पुण्य का काम माना जाता है। इसलिये ज्यादातर लोग जरूरतमंदों को पानी उपलब्ध कराने के लिये कई तरह के इंतजाम करते आए हैं, लेकिन धीरे-धीरे ये प्रयास कमजोर हो रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषण से पानी भी प्रदूषित तथा विषाक्त होता जा रहा है। निजी क्षेत्र इस अवसर का फायदा उठाना चाहता है। आधुनिक जीवनशैली और जलवायु परिवर्तन का सीधा असर पेयजल पर पड़ रहा है, जिस कारण पानी की खपत **(शेष पृष्ठ 31 पर)**

सेना में रिश्वत का मामला

❑ डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

सेना प्रमुख विजय कुमार सिंह ने खुलासा किया है कि टेट्रा ट्रकस कम्पनी के एजेंट ने उन्हें 14 करोड़ रुपये की रिश्वत देने की पेशकश की थी। इस रिश्वत का प्रस्ताव इसलिये था ताकि सेना के लिये इस कम्पनी के वाहन खरीद लिये जाएं। सेना प्रमुख ने उस दलाल को तो बाहर का रास्ता दिखा दिया, लेकिन तुरंत इस प्रस्ताव कि सूचना रक्षामंत्री को दे दी। सेना प्रमुख के अनुसार यह सूचना मिलने पर रक्षामंत्री ने अपना माथा पीट लिया। कांग्रेस के अधिकारिक प्रवक्ता मनीष तिवारी सेना प्रमुख के इस खुलासे से गुस्से में आ गए हैं। उनके अनुसार सेना प्रमुख को तुरंत पुलिस बुलाकर उस दलाल को हवालात में बंद करवाना चाहिये था। वैसे रिश्वत देने का प्रस्ताव देने वाले की शिनाख्त तेजिन्द्र सिंह के नाम से की जा रही है। मनीष तिवारी इतना तो जानते ही हैं कि तेजिन्द्र सिंह कुछ अरसा पहले ही लेफ्टीनेंट जनरल के पद से रिटायर हुए थे। विजय कुमार सिंह ने मसले की नजाकत और उसकी संवेदनशीलता को देखते हुए रक्षामंत्री के ध्यान में यह मामला ला दिया। रक्षामंत्री की ईमानदारी को लेकर किसी को संदेह नहीं है। इस बीच जब गिने-चुने ईमानदार मंत्रियों की बात होती है तो रक्षा मंत्री का नाम सबसे ऊपर दिखाई देता है। एक प्रश्न पैदा होता है कि सब कुछ जानते हुए भी रक्षामंत्री इस मामले पर रहस्यपूर्ण चुप्पी क्यों बनाए रहे। अब जब सेना प्रमुख ने खुद ही सेना में फैले भ्रष्टाचार के इस कूड़ेदान से ढक्कन उठा दिया है तो रक्षामंत्री सी.बी.आई. से जांच करवाने की बात कर रहे हैं।

सेना प्रमुख ने जो खुलासा किया है वह कोई ऐसा छिपा हुआ रहस्य नहीं था जिसके बारे में देश के आम आदमी को पता न हो। सेना के लिये जो हथियार खरीदे जाते हैं या फिर अन्य सामग्री खरीदी जाती है उसमें दलाल प्रमुख भूमिका निभाते हैं। कई बार दलाल इसी भूमिका के चलते सेना में घटिया माल भी सप्लाई करते हैं।

सेना प्रमुख ने जो खुलासा किया है वह कोई ऐसा छिपा हुआ रहस्य नहीं था जिसके बारे में देश के आम आदमी को पता न हो। सेना के लिये जो हथियार खरीदे जाते हैं या फिर अन्य सामग्री खरीदी जाती है उसमें दलाल प्रमुख भूमिका निभाते हैं। कई बार दलाल इसी भूमिका के चलते सेना में घटिया माल भी सप्लाई करते हैं। सरकार इसको जानती है, लेकिन दुर्भाग्य से इन दलालों को राजनीतिक लोगों से ही संरक्षण मिलता है। कारण स्पष्ट है कि दलाली की यह राशि जब बंटती है तो उसमें अनेक लोगों की जेबें भरती है। जिसकी जितनी हिस्सेदारी, उसकी उतनी जेब भारी। सेना में दलाली का एक बार ऐसा ही मामला पहले भी सामने आया था। इस वक्त मामला वाहन खरीदने का था, उस वक्त मामला बोफोर्स तोपें खरीदने का था। उस वक्त खुलासा सेना प्रमुख ने नहीं किया था बल्कि अन्य सूत्रों से तोपों की खरीद में दलालों की भूमिका का मामला सामने आया था। इस मामले पर केन्द्र में सरकार तक बदल गई थी। शक की सूई प्रधानमंत्री के घर की ओर घूम रही थी और इटली के कुछ दलालों की पहचान भी हो गई थी। तात्कालिक प्रधानमंत्री राजीव गांधी के आवास में ही अतिथि सुख भोगने वाले इटली के क्वात्रोची के बैंक खाते भी पकड़ में आ गए थे जिनमें दलाली का पैसा जमा होने का संदेह था। लेकिन दुर्भाग्य से केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने अपनी पूरी योग्यता किसी भी तरह क्वात्रोची को बचाने में ही खर्च कर दी। जब क्वात्रोची का पैसा सुरक्षित स्थान पर पहुंच गया और वह स्वयं भी कानून की पहुंच से बाहर हो गया तब जाकर सीबीआई की जान में जान आई। यदि उसी वक्त इस केस को तार्किक अन्त तक पहुंचा दिया जाता तो सेना को माल सप्लाई करने वाले दलालों को किराए पर लेने से पहले हजार बार सोचा जाता।

जब कम्पनियों, दलालों को इस बात का पता चल गया कि सरकार क्वात्रोचियों को सजा दिलवाने में रुचि नहीं रखती बल्कि उसका स्वार्थ उसको सही सलामत इटली तक पहुंचने में ही है। जाहिर है कि इससे कम्पनियों और दलालों, दोनों का ही हौसला बढ़ा और मामला सीधे-सीधे सेना प्रमुख से ही बात करने तक पहुंच गया। दुर्भाग्य से सोनिया कांग्रेस की सरकार सेना को भी राजनीति में घसीट रही है। इससे सेना के अनुशासन और जज्बे पर भी असर पड़ रहा है, जिससे बचा जाना चाहिये था। सेना प्रमुख विजय कुमार सिंह ने इस पूरे खेल में अपने हिस्से का पर्दा उठाकर अपनी भूमिका अदा कर दी है। अब देखना है भारत सरकार अपने हिस्से की भूमिका अदा कर पाती है या फिर किसी मनीष तिवारी को आगे करके एक बार फिर असली मुद्दे को भटकाने का ही काम करेंगी। ❑ (नवोत्थान लेखा सेवा)

एनजीओ के 'रंगे हाथ'

❑ सूर्यप्रकाश पाण्डेय

तमिलनाडु में कूडनकुलम परियोजना के विरोध के पीछे विदेशी मदद से संचालित एनजीओ का हाथ है। पिछले दिनों प्रधानमंत्री ने जैसे ही यह बयान दिया, भारत की खुफिया एजेंसियां तथा गृह मंत्रालय छानबीन एवं कार्रवाई में व्यस्त दिखे। आनन-फानन में कूडनकुलम परियोजना के विरोध के पीछे सक्रिय दस एनजीओ पर विदेशी सहायता नियमन के उल्लंघन का मामला दर्ज किया गया, जिनकी जांच सीबीआई को सौंप दी गई। गृहमंत्रालय के अनुसार इन एनजीओ पर आरोप है कि वे धर्मार्थ कार्यों हेतु प्राप्त धन को परमाणु परियोजना के विरोध में खर्च कर रहे थे।

प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्यमंत्री वी. नारायणसामी ने कहा, 'ऐसा पता चला है कि एनजीओ कूडनकुलम में परमाणु संयंत्र विरोधी अभियान में विदेशी धन का इस्तेमाल कर रहे हैं।' इसी मामले में अंग्रेजी दैनिक 'द पायनियर' ने अपनी रिपोर्ट में एनजीओ को प्राप्त विदेशी मदद का विस्तृत ब्यौरा दिया है। द पायनियर की रिपोर्ट के अनुसार वनवासी बाहुल्य क्षेत्रों जैसे उड़ीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड में 2,325 पंजीकृत एनजीओ हैं, जिन्हें 2009-10 में 600 करोड़ रुपये की विदेशी मदद प्राप्त हुई। वहीं पूर्वोत्तर राज्यों में 816 पंजीकृत एनजीओ को 2009-10 में ही 251 करोड़ रुपये की विदेशी मदद प्राप्त हुई।

इन सभी राज्यों में उड़ीसा पहले स्थान पर है, जहां के एनजीओ को सबसे अधिक विदेशी मदद मिलती है। उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं मध्य प्रदेश वह राज्य है जहां वनवासी लोगों की बड़ी आबादी निवास करती है। लम्बे समय से सेवा एवं शिक्षा के बहाने मिशनरियां भी इन क्षेत्रों में कार्यरत रही हैं जिन पर सेवा कार्यों के बदले मतांतरण करवाने के आरोप लगते रहे हैं। कमोबेश यही स्थिति देश के सर्वाधिक संवेदनशील क्षेत्र पूर्वोत्तर की भी है।

एनजीओ को मिलने वाली मदद पर एक नजर

राज्य	एनजीओ की संख्या	मिलने वाली राशि
उड़ीसा	1240	214.32 करोड़
झारखण्ड	465	159.65 करोड़
मध्य प्रदश	419	142.62 करोड़
छत्तीसगढ़	231	64.99 करोड़
असम	253	93.10 करोड़
मेघालय	123	63.91 करोड़
मणिपुर	265	36.81 करोड़
नागालैंड	78	29.03 करोड़
अरुणाचल प्रदेश	23	09.04 करोड़
मिजोरम	34	08.38 करोड़
त्रिपुरा	32	07.24 करोड़
सिक्किम	8	03.11 करोड़

एनजीओ के हाथ कहीं देश-विरोधी गतिविधियों में लिप्त तो नहीं हैं, इसकी पड़ताल करने में भारत सरकार ने देर कर दी है। यह पड़ताल अब भी शुरू नहीं होती यदि प्रधानमंत्री एनजीओ की भूमिका पर संदेह न जताते। उल्लेखनीय पहलू यह है कि एनजीओ धर्मार्थ कार्यों के बहाने अपने एजेंडे को बढ़ाने में लगे हुए हैं। जांच एजेंसियों को यह पड़ताल करनी चाहिये कि एनजीओ के आवरण में कहीं मिशनरियां तो अपने काम को अंजाम देने में नहीं लगी हैं। गौरतलब है कि सेवा कार्यों के बहाने मिशनरियां मतांतरण के एजेंडे को साकार करने में संलग्न हैं, ऐसे में यह जांच का विषय है कि पंजीकृत एनजीओ के नाम से आने वाला धन इन मिशनरियों के हवाले तो नहीं हो रहा है। अब यदि भारत की खुफिया एजेंसियों की इस मामले में नींद खुल ही गई है तो उसे इन एनजीओ को विदेशों से मिलने वाली मदद पर नजर रखनी चाहिये। ❑

With best compliments from

WINSOME

Textile Industries Ltd.
sco#191-192, Sector 34-A,
Chandigarh - 160022 (INDIA)

Tel: +91-0172-2603966,
4612000, 4613000
Fax: +91-0172-4614000
website: www.winsomegroup.com

(पृष्ठ 27 का शेष)

में जा जाकर बच्चों को गणित पढ़ने के लिये प्रेरित करते हैं ताकि उनकी नौकरियां भारतीय या चीनियों को न मिले। और भारतीय नेताओं को देखें कभी स्कूलों का रुख नहीं करते सिर्फ वोट और नोट पर ही केन्द्रित रहते हैं। सिर्फ डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इसके अपवाद हैं क्योंकि वे जहां भी जाते हैं, स्कूली बच्चों से जरूर मिलते हैं। क्योंकि वे मानते हैं कि बच्चे देश का भविष्य है और उनके विचार और प्रश्न दोनों विलक्षण हैं। माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी की सरकार के दौरान जो नदियों को जोड़ने की एक अति महत्त्वाकांक्षी परियोजना बनी की उसका आधार असम की एक आठवीं कक्षा की छात्रा का प्रश्न था।

वहीं दूसरी ओर जहां भारतीय शिक्षा सिर्फ प्रमाणपत्र हासिल करने तक ही सीमित है चीन और जापान में 10वीं का छात्र भी प्रयोगात्मक ज्ञान रखता है। जापान में प्रारम्भिक शिक्षा के समय पहले तीन वर्ष कोई भी किताबी पढ़ाई नहीं होती। राष्ट्र प्रेम, माता पिता का आदर, संस्कार, आदर्श वातावरण एवं पर्यावरण की स्वच्छता एवं सुरक्षा जैसे मूल्य बच्चों में पिरोए जाते हैं। भारतीय शिक्षा को विदेशी अतिक्रमण से बचाना होगा। इसका पुनर्मूल्यांकन करना अति आवश्यक है और एक बार संस्कृत को वही पुराना यश एवं भाषाई नेतृत्व भारतीय शिक्षा में सौंपना होगा। बिना संस्कृत एवं हिन्दी के यह हो नहीं सकता। अंग्रेजी को सिर्फ कार्य की भाषा या व्यापार की भाषा के रूप में ही रखना चाहिये। मगर संस्कृत और हिन्दी को ज्ञान, विज्ञान और व्यवहार की भाषा में वापिस लाना अति आवश्यक है अन्यथा हम अपने पौराणिक साहित्य, वेद, उपनिषद, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, पुराण, आदि कभी वास्तव में उपलब्ध थे, यह हमारी आने वाली नस्लों को ज्ञात भी नहीं रहेगा। ❑

(पृष्ठ 28 का शेष)

बढ़ रही है। वहीं पानी के भंडारण में कमी आती जा रही है। भूगर्भीय जलस्तर नीचे जा रहा है। कृषि में पानी की उपयोगिता लगातार बढ़ती जा रही है। इसे तत्काल कम करने की आवश्यकता है। छठे विश्व जल सम्मेलन में पानी के बाजार के विरोध में आवाज उठी और सामूहिक रूप से माना गया कि प्रकृति के नि:शुल्क उपहार पानी का व्यापार नहीं होना चाहिये। फ्रांस में इस सम्मेलन स्थल में 20 हजार लोगों ने मार्च निकालकर बताया कि पानी व्यापार के लिए नहीं है। पानी के व्यापार का असर पूरी मानव सभ्यता पर पड़ रहा है। ❑ (साभार : दैनिक जागरण)

(पृष्ठ 23 का शेष)

सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम धर्मों के जन्म-स्थान के रूप में मैं भारत से प्यार करती हूं; ऐसे देश के रूप में, जहां विशालतम पर्वत हिमालय स्थित है; ऐसे स्थान के रूप में जहां सबसे उदात्त पर्वत स्थित हैं। ऐसा देश, जहां सादगीपूर्ण घर हैं; जहां घरेलू सुख-शांति सबसे अधिक उपस्थित है; जहां स्त्री निस्वार्थ भाव से, विनम्रता से, बिना हिचकिचाहट के भोर से लेकर रात तक अपने प्रियजनों की सेवा करती है; जहां मां और दादी अपने बच्चों की सुख-सुविधा का ध्यान रखती हैं, पूर्वानुमान करती हैं और उसमें अपना योगदान देती हैं।

मेरी बहनो! भारत की इस प्यारी भूमि की पुत्री होने के कारण मैं आपमें से प्रत्येक को हृदय से प्यार करती हूं और आपसे अनुरोध करती हूं कि पश्चिम के साहित्य को पढ़ने के बजाए आप पूर्व के महान साहित्य का अध्ययन करें। आपका साहित्य आपका उत्थान करेगा। उसे कलेजे से लगाकर रखिए। अपने घरेलू जीवन की सादगी और सौम्यता को बनाए रखिये। उसकी शुचिता, जैसी वह प्राचीन समय में थी और आपके सादगीपूर्ण घरों में अब भी उपस्थित है, को बनाए रखिये। ❑

(साभार : भारत के महान भाषण पुस्तक से।)

(पृष्ठ 7 का शेष)

कहा? मुस्लिमों में तेजी जनसंख्या वृद्धि के लिये कभी उनकी आलोचना करना तो दूर रहा, कोई यह भ्रम न पाले कि भारत में ईसाई और मुस्लिम संख्या में हिन्दुओं से कम है, इसलिये उन पर जनसंख्या नियंत्रण की बातें लागू नहीं की जातीं। जहां ईसाई और मुस्लिम बहुसंख्या या एकछत्र संख्या में है, वहां भी उन्हें परिवार नियोजन का उपदेश कोई नहीं देता। न भारत के कश्मीर, केरल या नागालैंड में, न यूरोप या अरब में। बस पूरी दुनिया में एक मात्र हिन्दू देश भारत के हिन्दुओं को दिन-रात पढ़ाया जा रहा है कि आबादी कम करो। जबकि इसी देश में मुस्लिम और ईसाई आबादी का प्रतिशत निरंतर बढ़ रहा है। यह शिक्षित हिन्दुओं की मूर्खता या डेथ विश नहीं तो और क्या है? जो बुद्धिजीवी अपने घर में किसी को एक दिन रहने देने तैयार न होंगे, वे देश के सीमा में बंग्लादेशी, पाकिस्तानी मुसलमानों की नियमित घुसपैठ को मानवीय दृष्टि से देखने की सलाह देते हैं। उन्हें परवाह नहीं कि यदि यही चलता रहा तो असम, पं. बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि के लिये आगे क्या परिणाम होगा?वही होगा जो पश्चिमी पंजाब के सिखों, हिन्दुओं, कश्मीर के पंडितों का हुआ और असम में हिन्दुओं का जल्द होने वाला है। ❑

गौतम बुद्ध की सैकड़ों प्राचीन प्रतिमाएं मिलीं

चीन के हेबेई प्रांत में पुरातत्वविदों ने बुद्ध की 2000 से अधिक प्राचीन प्रतिमाएं खोजी हैं। इन प्रतिमाओं से पता चलता है कि साम्यवादी देश में बौद्ध धर्म तभी से लोकप्रिय है, जब से इसका भारत में प्रसार हुआ था। लिलझांग काडुटी के येशेंग स्थित एक ऐतिहासिक स्थल पर मिलीं बुद्ध की ये 2895 प्रतिमाएं और उनके अवशेष पूर्वी वेई और उत्तरी क्वी काल (534-577) के हैं। ❑

इस्लाम के प्रचारक निष्कासित

हैदराबाद से प्रकाशित दैनिक मुंसिफ में छपी खबर के अनुसार श्रीलंका की सरकार ने 160 इस्लामी धर्म प्रचारकों को देश से निष्कासित करने का निर्देश दिया है। कंट्रोलर ऑफ इमीग्रेशन चोला नंदा ने कहा है कि ये मुस्लिम प्रचारक पर्यटन वीजा लेकर श्रीलंका आए थे मगर ये यहां पर इस्लाम का प्रचार कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जिन इस्लामी धर्म प्रचारकों की निकाला गया है उनका सम्बंध भारत, पाकिस्तान, बांग्लोदश, मालद्वीप और अरब देशों से है। ❑

आस्ट्रेलिया में संस्कृत सम्भाषण शिविर

विश्व हिन्दू परिषद, आस्ट्रेलिया के द्वारा गत दिनों दस दिवसीय संस्कृत सम्भाषण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्देश्य संस्कृत पढ़ना, समझना तथा संस्कृत में वार्तालाप करना था। इसमें आस्ट्रेलिया के महिला-पुरुष तथा बच्चों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की। शिविर में प्रशिक्षण संस्कृत भारती के समर्पित कार्यकर्ता श्री वसुवज ने दिया। दस दिन तक चले शिविर में युवा प्रतिभागी अपनी भाषा में संस्कृत पढ़कर अच्छा महसूस कर रहे थे। ❑

जापान में महाभारत, गीता की धूम

बोधगया के समन्वय आश्रम में लम्बे समय तक रह चुके 70 वर्षीय जापानी शिक्षक होकबू इकदा रामायण, महाभारत तथा गीता के ज्ञान का बखान सुनकर इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने न सिर्फ हिन्दी सीखी बल्कि जापानी भाषा में तीनों महाकाव्य की रचना ही कर डाली। उनके कर्म का फल अब सामने आने लगा है। जापानी भाषा में लिखे तीनों महाकाव्यों को खासी लोकप्रियता मिलनी शुरू हो गई है।

प्रचंड के बंगले का संदेश

बुर्जुवा, सर्वहारा, गरीब-गरीबी जैसे मार्मिक शब्दों को पान की पीक की तरह थूकने वाले कामरेड असल में कितने दौलतपरस्त हैं इसका उदाहरण है नेपाल का माओवादी नेता पुष्पकमल दहल उर्फ प्रचंड। 'प्रचंड' का आलीशान बंगला विवादों में घिर गया है। लोग सवाल उठा रहे हैं कि आखिर उसके पास इसके लिये पैसा कहां से आया? राजधानी काठमांडू के पॉश इलाके लजिमपेट में बने इस घर में सुख-सुविधा की वह सभी चीजें मौजूद हैं जो ठाठ-बाट से जीवन जीने के लिये जरूरी होती है। एक बड़े अहाते वाले इस बंगले में स्विमिंग पूल और बैडमिंटन कोर्ट भी है। यही है मार्क्सवादी व लेनिनवादी जनक्रांति की असलीयत। ❑

न्यूजीलैंड के स्कूल की पहल : संस्कृत के माध्यम से अंग्रेजी सीखें

भले ही भारत में संस्कृत का महत्व नहीं समझा जाता, लेकिन न्यूजीलैंड के एक स्कूल में दुनिया की इस महान भाषा को सम्मान मिल रहा है। न्यूजीलैंड के इस स्कूल में बच्चों को अंग्रेजी सिखाने के लिये संस्कृत पढ़ाई जा रही है। फिकिनो नामक इस स्कूल का दावा है कि संस्कृत से बच्चों में सीखने की क्षमता काफी बढ़ जाती है। न्यूजीलैंड के शहर ऑकलैंड के माउंट इडेन इलाके में स्थित इस स्कूल में लड़के और लड़कियां दोनों को शिक्षा दी जाती है। 16 साल तक की उम्र तक यहां बच्चों को शिक्षा दी जाती है।

संस्कृत ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो व्याकरण और उच्चारण के लिहाज से उपयुक्त है। दुनिया की कोई भी भाषा सीखने के लिये संस्कृत भाषा आधार का काम करती है।

इस स्कूल का दावा है कि इसकी पढ़ाई मानव मूल्यों, मानवता और आदर्शों पर आधारित है। अमरीका के हिन्दू नेता राजन जेड ने पाठ्यक्रम में संस्कृत को शामिल करने पर फिकिनो की तारीफ करते हुए कहा कि संस्कृत को सही मुकाम दिलाने की जरूरत है। भारत सरकार इस भाषा को बढ़ावा देने के लिये कुछ नहीं कर रही है। ❑

पंडित से बढ़कर कोई उपाधि नहीं

कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति का एक पत्र पाकर पं. मदन मोहन मालवीय असमंजस में पड़ गए। 'बड़ा अनोखा प्रस्ताव रखा है। उत्तर में क्या लिखूं, समझ में नहीं आ रहा! पास बैठे एक सज्जन ने पूछा, 'ऐसी क्या बात है जिसके कारण आप असमंजस में पड़ गए।'

मालवीय जी मुस्कराते हुए बोले, 'कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति महोदय मेरी सनातन उपाधि छीन कर एक नई उपाधि देना चाहते हैं। यह कहकर वे पत्र पढ़ने लगे। उस पत्र में लिखा था–'कलकत्ता विश्वविद्यालय आपको डॉक्टरेट की सम्मानित उपाधि से अलंकृत कर अपने आपको गौरवान्वित करना चाहती है। आप अपनी अमूल्य स्वीकृति से शीघ्र ही सूचित करने की कृपा कीजिये।'

पास बैठे सज्जन ने कहा–'यह प्रस्ताव तो उचित ही है। एक प्रकार से यह वाराणसीवासियों के लिये विशेष गर्व की बात होगी।'

सारी बात सुनकर मालवीय जी बोले– 'इस उपाधि से वाराणसी के गौरव में कोई भी वृद्धि नहीं होगी। यह तो एक प्रकार से वाराणसी के पांडित्य को अपमानित करने का प्रस्ताव और योजना है।' उन्होंने उस पत्र का उत्तर लिखा, 'मान्यवर! आपके प्रस्ताव के लिये धन्यवाद। मैं जन्म और कर्म से ही ब्राह्मण हूं। अपनी मर्यादाओं के अनुरूप जीवन बिताना एवं 'पंडित' से बढ़कर अन्य कोई उपाधि ब्राह्मण के लिये नहीं हो सकती। मैं 'डॉक्टर मदन मोहन मालवीय' कहलाने की अपेक्षा 'पंडित मदन मोहन मालवीय' कहलाना अधिक पसंद करूंगा। आशा है आप मेरे मन की भावना का आदर करते हुए मुझे 'डाक्टर' बनाने का विचार त्याग 'पंडित' ही बना रहने देंगे।

उनके तर्क से खुश होकर उपकुलपति ने उन्हें लिखा– 'आपका निर्णय सुनकर हमें आपके पांडित्य पर जो गर्व था वह दुगुना हो गया। आप सच्चे अर्थों में पंडित हैं, जो उसके गौरव गरिमा की रक्षा के लिये कोई भी प्रलोभन त्याग सकते हैं।' ❑

With best compliments from

Ambuja Cement

'त्याग'

तुम भी त्यागी बनो,
प्रभु-अनुरागी बनो।
सत्कर्म कमा कर,
पुण्यफल-भागी बनो।
त्याग तपस्या है,
सुलझाता समस्या है।

पूर्णिमा बन छंटती,
नित अमावस्या है।
त्याग दुर्व्यस्नों का,
फल अच्छा देता है।
त्यागी मानव बनता,
सबका चहेता है।

त्याग भामाशाह का,
बन गया इतिहास है।
त्याग में ही तो,
मानवता का वास है।
त्यागीजन बन जाते,
औरों के लिये मिसाल हैं।

त्याग-भाव से रहते,
वे सदा खुशहाल हैं।
'प्रसाद' बिन त्याग के,
जीवन नि:सार है।
महिमा त्याग की तो,
बड़ी अपरम्पार है।

-**रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'** सिहाल (कांगड़ा)

सर्वाधिक लम्बी क्रेन आर्म

गत वर्ष सितम्बर महीने में भवन निर्माण सम्बंधी उपकरण निर्माता कम्पनी सानी ने एक नया रिकॉर्ड दर्ज करवाया था। यह रिकॉर्ड था विश्व की सबसे लम्बी क्रेन आर्म (जिसे ट्रक माउंटिड जिब या बूम भी कहा जाता है) का। इस ट्रक माउंटिड आर्म की लम्बाई 282 फुट 8.7 इंच मापी गई थी। इससे पहले यह रिकॉर्ड चीन की ही कम्पनी जूमलॉयन की मशीन का था जिसकी लम्बाई 262 फुट 9.58 इंच थी। इस मशीन का नाम गिनीज बुक के नवीनतम संस्करण में शामिल किया गया है।

वैसे सानी कम्पनी इसी श्रेणी में अक्तूबर 2007 तथा अगस्त 2009 में पहले ही रिकॉर्ड दर्ज करवा चुकी थी। इनमें पहला रिकॉर्ड 216 फुट 6 इंच तथा दूसरा 234 फुट 1.2 इंच था।

सानी के बूम्स यानी क्रेन आर्म्स का प्रयोग पुलों, ऊंचे भवनों तथा अन्य बड़े ढांचों के लिये कंक्रीट पम्पस के तौर पर किया जाता है परन्तु ऐसा भी नहीं है कि इनका प्रयोग सिर्फ

भवन निर्माण में ही होता है।

कम्पनी मानवीय दर्शन पर आधारित है। इसी के चलते इसने 62 मीटर का ट्रक माउंटिड कंक्रीट पम्प टोक्यो इलेक्ट्रिक पॉवर कम्पनी को फुकुशिमा न्यूक्लियर पॉवर प्लांट में वाटर इंजेक्शन कूलिंग के लिये दान दिया था। यह प्लांट 2011 में आई बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित हुआ था। ❑

हंसते-हंसते

☺ हर समय कुछ न कुछ खाती रहने वाली एक मोटी महिला के घर के दरवाजे पर एक दुबली-पतली भिखारिन कुछ मांगने के लिये आई और गिड़गिड़ाते हुए बोली, 'कुछ खाने को दे दीजिये, पिछले दो दिन से मैंने कुछ भी नहीं खाया है।'
'काश! मुझमें भी तुम जैसी हिम्मत होती।' मोटी महिला ने हाथ में पकड़ी हुई खाने की वस्तु को मुंह में डालते हुए कहा।

☺ संता की कार ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी थी। बाहर अखबार बेचने वाला हॉकर चिल्ला रहा था, शहर में 24 लोग ठगे गए। संता ने तुरंत अखबार खरीदा, पर उसे ठगी की खबर कहीं नहीं मिली। उसने फिर से बाहर देखा तो अखबार बेचने वाला चिल्ला रहा था, शहर में 25 लोग ठगे गए।

☺ एक सिपाही एक बच्चे से अपनी बहादुरी की डींग मार रहा था। बच्चा काफी देर तक चुपचाप सुनता रहा, फिर बोला, 'लेकिन तुम बहादुर नहीं हो।'
क्यों नहीं हूं?
इसलिये कि डर के मारे बंदूक लिये घूमते हो।
मालिक (नौकर से) तुझे कितनी बार कहा है कि उस दुकानदार से राशन न लाया कर। वह सौदा तोलते समय आंखों में धूल डाल देता है।
नौकर, 'जी, मैं उस समय आंखें बंद कर लेता हूं।'

प्रश्नोत्तरी

1. मानवीय शरीर में ओवेक्रैनन कहां स्थित है?
2. थलीय स्तनपायियों में सबसे बड़े दिमाग वाला जानवर कौन-सा है?
3. द्वितीय विश्व युद्ध में किस जर्मन कमांडर को 'द डैजर्ट फॉक्स' कहा गया था?
4. स्वतंत्र भारत की पहली डाक टिकट पर क्या अंकित था?
5. प्रतिवर्ष लगने वाले सूर्य ग्रहणों (आंशिक वार्षिक या कुल) की अधिकतम संख्या क्या है?
6. गुरु डोंगमर नामक सुन्दर झील भारत के किस राज्य में है?
7. फिल्म पुरस्कारों के संदर्भ में आईफा (IIFA) से क्या अभिप्राय है?
8. माउंट एवरेस्ट के शिखर पर पानी किस तापमान पर उबलता है?
9. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के अनुसार बच्चों में पाई जाने वाली सर्वाधिक गम्भीर बीमारी कौन-सी है?

15 अप्रैल, 2012

सबसे ऊपर हिमाचल

65वें हिमाचल दिवस

पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई

''हमारा लक्ष्य ऊँचा है, इरादे नेक हैं, प्रयास ईमानदार हैं और मन में अटल विश्वास है।

आओ! हम सब संकल्प लें, हिमाचल प्रदेश को देश का समृद्ध, साधन-सम्पन्न एवं विकसित राज्य बनाने का।''

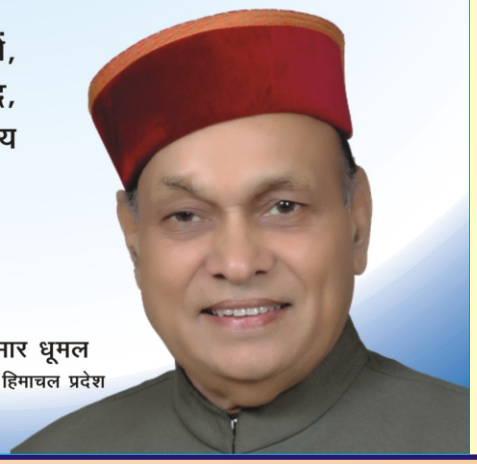

प्रेम कुमार धूमल
मुख्य मंत्री, हिमाचल प्रदेश

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

HP/48/SML (upto 31-12-2014) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIMACHAL SORANG POWER LIMITED

SORANG HEP (100MW), IN DISTT. KINNAUR

Clean Energy, Green Himachal

Project Features

- One of The Smallest Water Conductor System
- No Rehabilitation and Resettlement
- Minimum Requirement of Forest and Private Land
- Only 3.27 Km line for Power Evacuation

Commitment towardsProtection of Environment and Local Area Development

- CAT Plan Amountworth Rs. 647.02 lacs deposited with Forest Department.
- Major Thrust in CAT Plan for Social and Economic Development of the Area,Wildlife Protection (Especially conservation of Western Tragopan), Eco-tourism Development. Rs. 70 Lacs earmarked for Sarahanpheasantry development
- Rs. 8.79 Crore being spent under Local Area Development Fund
- All Land Losers Given Direct Employment in the Project
- Pension worth Rs. 3000/- per month being given to 70 unemployable land losers, an unemployment allowance of Rs. 2000/- per month being given to 100 persons from project affected Panchayats.
- Water Supply scheme under construction for Dubling village
- Traffic tunnel constructed for Barakamba Village road to protect downhill environment.
- Rs. 3 Crores gra tion of Toilets in RupiPanchayat

NCC Infra

Himachal Sorang Power Ltd.
D-7, Lane-I, Sector-I, New Shimla, H.P.

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला - 171 009, से प्रकाशित।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276